॥ मंगल पाठ ॥

ओं नमः सिद्धं ॥

॥ दोहा ॥

मंगल मूर्ति परमपद पंचधरौं नित ध्यान ।
हरो अमंगल विश्व का मंगलमय भगवान ॥१॥
मंगल जिनवर पद नमौं मंगल अरिहंतदेव ।
मंगल कारी सिद्ध पद सो बंदौं स्वयमेव ॥ २ ॥
मंगल आचार्य: मुनि: मंगल गुरु उवझाय ।
सर्व साधु मंगल करो बन्दौं मन वच काय ॥ ३ ॥
मंगल सरस्वति मातका मंगल जिनवरधर्म ।
मंगल मय मंगल करो हरो असाता कर्म ॥ ४ ॥
या विधि मंगल करन से जग में मंगल होत ।
मंगल नाथूराम यह भवसागर दृढ़ पोत ॥ ५ ॥

ओं नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु

सहस्रनाम भाषा ॥

॥ दोहा ॥

सहस्र अठोत्तर ख्यात जो लक्षण वाणी ईश ।
सफल मनोरथ मो करो सो जिनवर जगदीश ॥ १ ॥
श्रीमान तुम स्वयंभू वृषभः संभव वान ।
शम्भु आत्मभू स्वयं प्रभः प्रभुः भोक्ताजान ॥ २ ॥
विश्वभूः अपुनर्भवः विश्वात्माः जगदीश ।
विश्वलोकेशो विश्वतः चक्ष अक्षरः ईश ॥ ३ ॥
विश्वः वित जिनराज तुम विश्व विद्येशो ईश ।
विश्व योनि सु अश्वरः विश्व दृश्वा जगदीश ॥ ४ ॥
विभु धाता विश्वेश हो विश्वःव्यापी जान ।
विधि वेधा हो शाश्वतो विश्वतो मुखः ज्ञान ॥ ५ ॥
विश्व कर्म जगजेष्ठ हो विश्व मूर्त्ति जिन ईश ।
विश्वदृक्क जिन देव तुम विश्व भूतेशो शीस ॥ ६ ॥
विश्वः जोति अनीश्वरः जिनः सु जिष्णुः जान ।
अमेयात्मा विश्व के ईश जगत्पति मान ॥ ७ ॥
अनन्त चित्चिन्तात्मा भव्य बन्धु तुम देव ।
अबन्धनः युग आदि हो पुरुषो ब्रह्मा एव ॥ ८ ॥

पंच ब्रह्ममय शिवपर: परतर सूक्ष्म जान ।
परमेष्ठी तुम सनातनं स्वयं ज्योति भगवान ॥ ९ ॥
अज: अजन्मानाथ तुम ब्रह्म योनि जगदीश ।
अयोनिज: मोहारि के विजयीजेता ईश ॥ १० ॥
धर्म चक्र पति दयाध्वज प्रशान्तारि भगवान ।
अनन्तात्मा तुम प्रभू योगी धरता ध्यान ॥ ११ ॥
योगीश्वर अर्चित तुम्हें ब्रह्म विस्सु तुम ज्ञान ।
ब्रह्म तत्त्वज्ञोनाथ तुम ब्रह्मविद्यावित जान ॥ १२ ॥
यतीश्वर: सिद्धो बुध: प्रबुद्धात्मा जान ।
सिद्धार्थ: सिद्ध शासन: सिद्ध सिद्धान्त वान ॥ १३ ॥
ध्येय: सिद्ध सु साध्यो जगत हित: भगवान ।
सहिष्णु अच्युत अनन्त: प्रभु विष्णु: तुम जान ॥ १४ ॥
भव उद्भव: प्रभूष्णु: अजर अजर्यो ईश ।
भ्राजिष्णु: अधिईश्वर: अव्यय तुम जगदीश ॥ १५ ॥
विभावसु: असंभूष्णु: स्वयंभूष्णु: नाथ ।
पुरातन: परमात्मा परंज्योति गुण गाथ ॥ १६ ॥
त्रिजगत्परमेश्वर: तुम श्रीमच्छादिक नाम ।
भाषे इक शतप्रेम से लघुमति नाथूराम ॥ १७ ॥

॥ इति श्री मच्छादि शतं १०० ॥

दिव्यसु भाषा के पति: दिव्य मूर्ति सो जान ।
पूत वाकपूत शासन: पूतात्मा भगवान ॥ १ ॥
परम ज्योति तुम धर्म के हो अध्यक्ष प्रधान ।
दमीश्वर: श्रीपति: तुम भगवन् अर्हन् जान ॥ २ ॥
नरजा विरजा शुचि: तुम तीर्थ कृत भगवान ।
केवलीशान: नाथ तुम पूजार्ह सु प्रधान ॥ ३ ॥

शरण्य पुण्य वांक्पूत हो वरेण्यपुण्यः ईश ।
नायक अगण्य पुण्यधी गण्यः तुम जगदीश ॥ ६ ॥
पुण्य कृत्सु पुण्य शासनः धर्मारामोनाथ ।
गुण ग्रामः पुण्य अपुण्यः निरोधकः गुणगाथ ॥ ७ ॥
पाप पेतो त्रिजग पति विपापात्म विन पाप ।
विपाप्मा वित कल्मषः निर्द्वन्द्वौ तुम आप ॥ ८ ॥
निर्मद् शान्त मोह विन निरुपद्रवः जिनेश ।
निर्निमेष आहार विन भाषत एम गणेश ॥ ९ ॥
निर आहारो निःक्रियो निरुपल्लव बखान ।
निकलंको अस्तैन विन निर्धूतांगो जान ॥ १० ॥
निरास्त्रवः तुम विशालो विपुल ज्योति भगवान ।
अतुल अचिन्त्य सुवैभवः सुसंवृत्त गुणखान ॥ ११ ॥
सुगुप्तात्मा नयसुभृत् तत्त्व वित्सु जगदीश ।
इक विद्यो विद्यो महा मुनि परिवृढ़ पति ईश ॥ १२ ॥
धीशो विद्या निधिः तुम साक्ष्य विनेता ईश ।
विहितान्तकः पिता कहे पिना महाजगदीश ॥ १३ ॥
पाता पवित्र नाथ तुम पावन गति स्वयमेव ।
त्राता भिषग्वरो प्रभुः वर्यो वरदः देव ॥ १४ ॥
परम पुमान कविः कहे पुराण पुरुषो नाथ ।
वर्षीयान वृषभप्रभुः त्रिभुवन पति गुणगाथ ॥ १५ ॥
प्रतिष्ठ प्रसवो हेतुहो करें बड़ाई केम ।
भुवनैक के पिता महा गणधर भाषत एम ॥ १६ ॥
इति महादि शत नामते आस्रव करत प्रणाम ।
अल्प बुद्धि कर जोड़ के नवेसु नाथूराम ॥ १७ ॥

॥ इति श्री महादि शतं ४०० ॥

सुसौम्यात्मा सूर्य तुम मूर्ति महा द्युतिमान ।
सुमन्त्र वित् हो मंत्र कृत मंत्री तुम भगवान ॥ ११ ॥
मन्त्र मूर्ति अन् अंतकः स्वतंत्र तंत्र कृतान ।
स्वान्तः कृतांतान्तः कृतान्त कृत कृतिवान ॥ १२ ॥
कृतार्थः सत्कृत्य कृत कृत्यः कृत कृतु नाथ ।
नित्यो मृत्युंजयो मृतु अमृतात्मा गुण गाथ ॥ १३ ॥
अमृत उद्भवः ब्रह्म में निष्ठः परं सु ब्रह्म ।
ब्रह्मात्मा ब्रह्म संभवः महाब्रह्म पति सौम्य ॥ १४ ॥
महाब्रह्म पद ईश्वरः ब्रह्मेट हो प्रसन्न ।
प्रसन्नात्मा ज्ञान अरु धर्म सुदम प्रभु पन्न ॥ १५ ॥
प्रशमात्मा जिन राज हो प्रशान्तात्मा ईश ।
पुराण पुरुषोत्तमः प्रभु राजत तुम जगदीश ॥ १६ ॥
स्थविष्ठादि शत नाम ले किया तृतिय अधिकार ।
नाथूराम नवे सदा तुम पद कर शिरधार ॥ १७ ॥

॥ इति श्री स्थाविष्ठादि शतं ३०० ॥

महाशोकध्वज अशोकः कः स्रष्टा सु जिनेश ।
पद्मविष्ठरः नाथ तुम राजत हो पद्मेश ॥ १ ॥
पद्म संभूतिः पद्म सम नाभि अनुत्तर देव ।
पद्म योनि जग योनि इति स्तुति करिये एव ॥ २ ॥
स्तुति ईश्वर स्तवन तुम अर्हो हृशी सु केश ।
जित जेयः कृत क्रियः तुम गणाधिपो सु जिनेश ॥ ३ ॥
गणज्येष्ठो गण्यः प्रभुः पुण्यः अगण सु ईश ।
अग्रणीः गुण आकरो गुणाम्भोधि जगदीश ॥ ४ ॥
सु गुणज्ञो गुण नायकः गुणादरो भगवान ।
गुण उच्छेदी निर्गुणः पुण्य गीर्गुण जान ॥ ५ ॥

भूत भव्य अरु भवलूको भर्त्ता हो भगवान ॥ १६ ॥
विश्व सु विद्या के तुम्हीं नाथ महेश्वर ईश ।
दिव्यादिक शतनाम ले नथमल नावतशीश ॥ १७ ॥
॥ इति श्रीदिव्यादि शतं ॥ २०० ॥
स्थविष्ठः स्थविरो प्रभु; जेष्ठः प्रेष्ठा जान ।
पृष्ठ वरिष्ठः धीसु हो स्थेष्ठो अविचल थान ॥ १ ॥
गरिष्ठो वर्हिष्ठाः सुबुध श्रेष्ठो निष्ठो हेट ।
गरिष्ठगो हो विश्व भृत् विश्वः स्टट विश्वेट ॥ २ ॥
विश्वः भुक जगनायकः विश्वाशी सु प्रधान ।
विश्व रूपात्मा विश्वजित बिजितान्तकः सुजान ॥३॥
विभवो विभयो वीर तुम सविशोको तुम एव ।
विजरो जरन विरागहो विरत अंश गो देव ॥ ४ ॥
हो विव्यक्त वित्मत्सरः विनेय जगता बन्धु ।
विलीन अशेष कलमषः योग रहित निरद्वन्द्व ॥ ५ ॥
योग वित्सु विद्वान हो सुविधि विधाता ईश ।
सुधी क्षांति भाक् प्रथिवी मूर्तिः तुम जगदीश ॥ ६ ॥
आन्तिभाक् सलिलात्मकःवायुमूर्ति तुम आप ।
असंगात्मा हो सदा मेटत जग संताप ॥ ७ ॥
मूर्ति वन्हि अधर्म धृक शुचि यज्वा यजमान ।
आत्मा श्रुत्वा नाथ तुम सुत्राम पूजित जान ॥ ८ ॥
ऋत्विक यज्ञ पतिः प्रभुः यज्ञो पूजन योग ।
यज्ञागम अमृतं हविः व्योम मूर्ति सु मनोग ॥ ९ ॥
अमूर्तात्मा देव तुम निरलेयो भगवान ।
निर्मल अचलः सोम तुम मूर्ति आनन्द खान ॥ १० ॥

स्नातक अबल: हो प्रभु: अनन्त दीप्तिवान ।
ज्ञानात्मा हो स्वयं बुध प्रजापतिः भगवान ॥ ४ ॥
मुक्तःशक्तो अरु निराबाधो आप जिनेश ।
निष्कल भुवनेश्वरः प्रभु निरंजनो सु महेश ॥ ५ ॥
जगज्योतिः सु निरुक्त है उक्ति निरामय वान ।
अचल स्थिति अक्षोभ्य: कूटस्थः शिव थान ॥ ६ ॥
स्थानु: अक्षय: प्रभु: अग्रणी: गुणगाथ ।
ग्रामणी: नेता सही तथा प्रणेता नाथ ॥ ७ ॥
न्याय शास्त्र कृत शास्ता धर्म पतिः जिनराज ।
धर्म्यो धर्मात्मा धर्म तीर्थंकर महाराज ॥ ८ ॥
वृषध्वजो आधीश वृष वृष केतुः जिनराज ।
वृषायुध: सु वृषोपति: वृषभर्त्ता महाराज ॥ ९ ॥
वृषभाङ्को सु वृषोद्भव: हिरण्य नाभिः देव ।
भूतात्मा प्रभु भूत भृत भूत भावना एव ॥ १० ॥
प्रभवो विभवो भास्वन् भवो सु भावो वान ।
भवान्तकः तुम हो प्रभुः हिरण्य गर्भः जान ॥ ११ ॥
श्रीगर्भः सु प्रभूत तुम विभवोत् अभव: जान ।
स्वयंप्रभु: प्रभूतात्मा भूतनाथ भगवान ॥ १२ ॥
जगत्प्रभुः सर्वादि हो सर्व सु दृक् जगदीश ।
सार्वः सर्वज्ञः तुम्ही सर्व दर्शनः ईश ॥ १३ ॥
सर्वात्मा सब लोक के ईश सर्व व्रत देव ।
सर्व लोक जित सुगति रत सुश्रुत सुश्रुक देव ॥ १४ ॥
सुवाक सूरि: बहु श्रुतः विश्रुत विश्वत पाद ।
विश्वः शीर्ष शुचि श्रवःसहस्र शीर्ष मर्याद ॥ १५ ॥
क्षेत्रज्ञः सहस्राक्षः सहस्र पात बलवान ।

श्री वृक्ष लक्षणः शुभ श्लक्ष्णो युत लक्षण्य ।
सुलक्षणः सो निरक्षः तुम सम और न अन्य ॥ १ ॥
पुंडरीकाक्षः पुष्कलाः पुष्करेक्षणः ईश ।
सिद्धि संकल्पः सिद्धिदः सिद्धात्मा जगदीश ॥ २ ॥
सिद्धि साधनाः बुद्धकर बोध्यो महा सुबोधि ।
बर्द्धमानाः महर्द्धिकः वेदांगोः अक्रोधि ॥ ३ ॥
वेदवित् वेद्यो हो प्रभु जास रूप भगवान ।
विदाम्बर वेद वेद्यः स्वसंवेद्यो जान ॥ ४ ॥
विवेद वदताम्बरः हो अनादि निधनः जान ।
व्यक्त अवयक्तो वाक्हो व्यक्त शासनः वान ॥ ५ ॥
युगादि कृत् युगाधार हो युगादि हो भगवान ।
जगदादिजः अतींद्रो अतींन्द्रियः तुम जान ॥ ६ ॥
अधिइंद्रो महइंद्र हो अतींद्रियार्थ दृक् जान ।
अनिंद्रियो अहमेंद्रार्चो महेंद्र महित महान ॥ ७ ॥
उद्भव कारण के प्रभू हो तुम ही कर्त्तार ।
पारगो सु भव तारकः मुक्ति रमनि भर्त्तार ॥ ८ ॥
अगाह्यो गहनं गुह्यं परार्ध्यः परमेश ।
अनन्तद्धर्य मेयर्द्धिहो अचिंत्यर्द्धि सु जिनेश ॥ ९ ॥
समग्रधी प्रग्र्यः प्रभुः को करस के बखान ।
प्रागहरः अभि अग्य् हो प्रव्यग्रो भगवान ॥ १० ॥
प्रत्यग्रोग्य्रः अग्रमः अग्रज सब में जान ।
महा तपा महतेज हो महदर्को भगवान ॥ ११ ॥
महोदयः सु महा यशो महधामा जगदीश ।
मह सत्वो मह धृतिः हो महधैर्यो तुम ईश ॥ १२ ॥
महावीर्य मह सम्पतिः महा बलः मह शक्ति ।

महाज्योति मह भूतिहो महा द्युतिः तुम व्यक्ति ॥ १३ ॥
महा मतिर्मह नीतिहो महा क्षांति भगवान ।
महा उदय महा प्रज्ञ हो मह भागो शु महान ॥ १४ ॥
मह नन्दो सु महा कविः महा महा यशवान ।
महा कीर्ति मह कांति हो महा वपुः मह दान ॥ १५ ॥
मह ज्ञानो योगो महा महा गुणः तुम ईश ।
महा महा पति देव हो त्रिभुवन में जगदीश ॥ १६ ॥
प्राप्त महा कल्याण हो मह पंचक अमलान ।
प्रातिहार्य आधीश मह महेश्वरः भगवान ॥ १७ ॥
इति श्री वृक्षादिक सुभगनाम शतक गुणधाम ।
अल्प बुद्धि वर्णन किये तुम्हरे नाथूराम ॥ १८ ॥

॥ इति श्रीवृक्षादिशतं ५०० ॥

महा मुनिः मौनी महा मह ध्यानी गुणखान ।
महा दमः मह क्षमोप्रभु मह शीलो भगवान ॥ १ ॥
मह यज्ञोरु महा मखः मह व्रत पति जगदीश ।
महो महा कांतिः धरः अधिपः हो तुम ईश ॥ २ ॥
मह मैत्री मेवो महा महा उपायो राज ।
महो दया कारुण्य मह कोमन्ता जिनराज ॥ ३ ॥
मह मंत्रोरु महा यतिः मह नादो मह घोष ।
महेज्यो मह सांपतिः महा ध्वरधरो पोष ॥ ४ ॥
धुर्यो मह औदार्यो महिष्टवाक प्रधान ।
महात्मा संधाम मह महर्षि तुम भगवान ॥ ५ ॥
महितोदय मह क्लेश को अंकुश शूरोईश ।
महाभूत पतिगुरुः तुम त्रिभुवनमेंजगदीश ॥ ६ ॥
महा पराक्रम अनन्तः महा क्रोध रिपु जीत ।

मह भवाब्धि संतारि तुम हो त्रिभुवन के मीत ॥ ७ ॥
महामोह रिपु आंद्रिको सूदन तूम भगवान ।
महा गुणा कर क्षांतो मह योगीश्वर जान ॥ ८ ॥
शमी आप मह ध्यानपति ध्याता महा सुधर्म ।
महाव्रतः मह कर्म अरि आत्मज्ञो तुम पर्म ॥ ९ ॥
महदेवोरुं महेशिता सर्व क्लेश अपहार ।
साधुदोष सब हरोहर त्रिभुवन माहिं उदार ॥ १० ॥
असंख्येय अप्रमेयहो आत्म त्रिजगत् ईश ।
शमात्मो प्रशमाकरः सब योगीश्वर शीश ॥ ११ ॥
अचिन्त्यहो श्रुत आत्मा विष्टरश्रवा सुजान ।
दंतात्मादम तीर्थ पति योगात्मा भगवान ॥ १२ ॥
ज्ञान सर्वगः नाथ तुम प्रधानात्मो जान ।
प्रकृति परम परमोदयः प्रक्षीण बन्ध महान ॥ १३ ॥
कामारिः तुम क्षेम कृत शासनः ईश ।
प्रणवप्रणय प्राणः सुबुधप्राणद हो जगदीश ॥ १४ ॥
प्रणतेश्वरः सु प्रमाणं प्रणधिर्दक्षो नाथ ।
दक्षिण अध्वर्यु अध्वरः आनन्दो गुणगाथ ॥ १५ ॥
नन्दनो नन्दो वंद्य हो अनिंद्य अभिआनन्द ।
कामह कामद काम्यः काम धेनु सानन्द ॥ १६ ॥
अरिंजयः ये नामशत महा मुन्यादिक शिष्ट ।
नाथुराम वर्णन किये जो त्रिभुवन में इष्ट ॥ १७ ॥

॥ इति श्री महामुन्यादि शतं ६०० ॥

असंस्कृत तुम नाथ हो सुसंस्कार भगवान ।
प्राकृतो वैकृतांत कृत अन्त कृत्सु अमलान ॥ १ ॥
कान्त गुःकान्तः प्रभू चिंतामणि अभि इष्ट ।

दाता अजितो नाथ हो जित कामारि विशिष्ट ॥ २ ॥
अखिलः अमित सुशासनः जित क्रोधो भगवान ।
जित अमित्र जित क्लेश जित अन्तक शिष्टमहान ॥३॥
परमानन्दो मुनीन्द्रो दुन्दुभिस्वनः महेंद्र ।
वन्द्यो योगीन्द्रोयती इन्द्रो आप जिनेंद्र ॥ ४ ॥
नाभि नन्दनः नाभियो नाभिज अजात ईश ।
सुव्रतो मनु उत्तमः प्रभु अभेद्यः जगदीश ॥ ५ ॥
अनति अयः अनश्वानधिक अधि गुरु सुधो सुमेध ।
विक्रमो स्वामी तुम दुरा धर्षो कर्म निपेध ॥ ६ ॥
निःउत्सुक सुविष्ट तुम शिष्ट भुक्सु तुम शिष्ट ।
प्रत्यय कर्मन अनघहो क्षेमी जग को इष्ट ॥ ७ ॥
क्षेमंकरः सु अक्षयः क्षेम धर्म पति ईश ।
क्षमी आगह्यो ज्ञाननिः ग्राह्यो तुम सुमतीश ॥ ८ ॥
ध्यान-गम्य निः उत्तरः सुकृतो धातुः जान ।
इज्यार्हः सुनयः चतुः आनन तुम भगवान ॥ ९ ॥
श्री निवासः चतुः तुम वक्रः चतुः सुजान ।
आस्यः चतुर्मुखः प्रभू सत्यात्मा सु प्रधान ॥ १० ॥
सत्य विज्ञानः सत्यवाक् सत्य शासनः देव ।
सत्याशी प्रभु सत्य तुम संघानः वर देव ॥ ११ ॥
सत्यः सत्य परायनः स्थेयान् स्थवीयान ।
नेदीयान् दवीयान हो दूर दर्शनः ज्ञान ॥ १२ ॥
अणोरणीयानन्अणुः गुरु आरोद्यो तुम ईश ।
गरीयसाम सदायोग हो सदा भोग जगदीश ॥ १३ ॥
सदा तृप्त हो सदाशिव सदा गतिः सुखज्ञान ।
सदा सु विद्यावान हो सदा उदय अमलान ॥ १४ ॥

सुघोषः सुमुखः सौम्य हो सुखदः सुहितः रूप ।
सुहृत् सु गुप्तो गुप्ति भृत गोप्ता जग के भूप ॥१५॥
लोकाध्यक्षो दमीश्वर इत्यादिकशत नाम ।
असंस्कृत आदिक कहे लघुमति नाथूराम ॥ १६ ॥

इति श्री असंस्कृतादि शतं ७०० ॥

बृहद्बृहस्पति वाग्मी वाचस्पति भगवान ।
उदार धी तुम मनीषी धिषणो धीमा जान ॥ १ ॥
छेमुखीश तुमगिराम्पति नैक रूप जिन राज ।
नय तुंगो नैकात्मा नैक धर्मकृत राज ॥ २ ॥
अविज्ञेयो प्रतर्क्यात्मा कृतज्ञ कृत तुम ज्ञान ।
लक्षण्यः तुम ज्ञान से गर्भित दया निधान ॥ ३ ॥
रत्न गर्भ तुम प्रभा स्वर पद्म गर्भ भगवान ।
जग गर्भो तुम नाथ हो हेम गर्भद्युति वान ॥ ४ ॥
सुदर्शनः श्रीमान तुम त्रिदशा ध्यक्षो ईश ।
दृढ़ी यानि तुम नैशिता मनो हरो जगदीश ॥ ५ ॥
मनोज्ञ अंगो धीर तुम गम्भीर शाशनवान ।
धर्म यूपयागो दयो धर्म नेमि गुणखान ॥ ६ ॥
मुनीश्वरः तुम धर्म का चक्रायुध धरतार ।
देव कर्म हा धर्म की करत घोषणासार ॥ ७ ॥
अमोघवागमोघाज्ञा निर्मल अमोघ ज्ञान ।
शासन तुम अति सरूपः सुभगः तुम भगवान ॥ ८ ॥
त्यागी समयज्ञः प्रभू समाहितः जगदीश ।
सुस्थित स्वास्थ्य भाक हो स्वस्थो त्रिभुवन ईश ॥९॥
नीर जस्क निः उद्भवः अलेप तुम निकलंक ।
आत्म वीत सुराग हो गतस्पृहः अकलंक ॥ १० ॥

वशेंद्रियो तुम नाथ हो विमुक्तात्मा ईश ।
निः सम्पत्नो जिन्तेंद्रिय प्रशान्तः जगदीश ॥ ११ ॥
अनन्त धामार्षिः प्रभू मंगल मय सुज्ञान ।
मलहानघ्नः अनींहक् उपमा भूत महान ॥ १२ ॥
दृष्टिर्दैवमगोचरः अमूर्ति मूर्तिवान ।
एक न एको न अन इक तत्त्वदृक् भगवान ॥ १३ ॥
अध्यात्म गम्यो प्रभू गम्यात्मा वित योग ।
योगि वंदितः सर्वत्रग सदा सु भावी न्योग ॥ १४ ॥
त्रिकाल विषय सु अर्थदृक् शंकर संवद वान ।
दान्तो दमी स्वभावयुत क्षान्ति परायन जान ॥ १५ ॥
अधिपः परमानन्द मय परात्मज्ञः ईश ।
परात्पर हो त्रिजगके वल्लभ तुम जगदीश ॥ १६ ॥
अभि अर्च्या त्रै जगत में मंगल उदय महान ।
त्रिजगत्पतिपूर्जाघ्र हो त्रिभुवन पति भगवान ॥ १७ ॥
त्रिलोकाग्रके शिखामणि वृहदादिक शतनाम ।
कहे भक्तियुत अल्प मति सेवक नाथूराम ॥ १८ ॥

॥ इति श्रीवृहदादि शतं ॥ ८०० ॥

त्रिकाल दर्शी लोक का ईश रु ध्याता लोक ।
दृढ़ व्रतः सब लोकसे अतिग पूज्य हत शोक ॥ १ ॥
सर्व लोक इक सारथिः पुराण पुरुषः पूर्व ।
कृत्पूर्वांग विस्तरः आदि सु देव अपूर्व ॥ २ ॥
पुराणाद्य पुरु देव तुम अधि देवता बखान ।
युग मुख्यो युग ज्येष्ठो तुमही हो भगवान ॥ ३ ॥
युगादि स्थिति देशकः कल्याणवर्ण कल्याण ।
कल्प कल्याणः लक्षणः कल्याण प्रकृति महान ॥ ४ ॥

दीप्तः कल्याणात्मा विकल्मषः विकलंक ।
कलातीत कलिलघ्न हो कलाधरः निकलंक ॥ ५ ॥
देव देव जगनाथ हो जगद्बन्धु भगवान ।
जगद्विभुः जगहितैषी लोकज्ञः सुप्रधान ॥ ६ ॥
सर्व सु गत जगद ग्रजः गुरू चराचर जान ।
गोप्यो गूढ़ सु आत्मा गूढ़ गोचरः वान ॥ ७ ॥
सद्यो जातः हो प्रभू प्रकाशात्मा ईश ।
ज्वलज्ज्वलनसु प्रभः तुम आदित्य वर्ण मुनीश ॥ ८ ॥
भर्माभः सु प्रभः कनक प्रभा सुवर्णहि वर्ण ।
रुक्माभः रवि कोटिसम प्रभारूप जिमिस्वर्ण ॥ ९ ॥
तपनीयः निभ तुंग तुम वालार्काभः जान ।
अनल प्रभा संध्याभ्र हो बभ्रु हेमाभः वान ॥ १० ॥
तप्त चामीकर छविः तुम निष्टप्त कनकः छाय ।
कनत्कांचन सन्निभः हिरण्य वर्णः आय ॥ ११ ॥
स्वर्णाभःशात कुम्भनिभ प्रभः द्युम्नभाजात ।
रूपाभो द्युति जाम्बुनद दीप्त आप विख्यात ॥ १२ ॥
सुधौत कलधौत श्रीः प्रदीप्त हाटक वान ।
द्युति शिष्टेष्टः पुष्टिदः पुष्टः तुम भगवान ॥ १३ ॥
स्पष्टः स्पष्टाक्षर क्षमः शत्रुघ्नो जगदीश ।
प्रतिघ अमोघः प्रशस्ता शासित स्वभूसुईश ॥ १४ ॥
शांति निष्ट मुनि ज्येष्टः शिव तातिः भगवान ।
शिवप्रदः प्रभु शांतिदा कृच्छांति प्रधान ॥ १५ ॥
कान्तिमान कामित प्रदः श्रेयोनिधि अधिष्ठान ।
अप्रतिष्ठःनप्रतिष्ठतः सुस्थित आसनवान ॥ १६ ॥
स्थावरः स्थानु हो प्रथियान्प्रथितः जान ।

त्रिकालादि सतनामशुभ नाथूरामगुण खान ॥ १०५

॥ इति श्री त्रिकालादि सतं ९०० ॥

दिग्वासा तुम्हरे प्रभु वात रसन तुम ईस ।
निर्ग्रंथेश निअम्बरः निः किंचिनं जगदीस ॥ १ ॥
निः आसंसो ज्ञान दृग अमोमुहः भगवान ।
तेज रासि तुम नाथ हो अनन्त औज प्रधान ॥ २ ॥
ज्ञान अब्धि हो सील के सागर श्री जिनराज ।
तेजो मयतुम विश्व में अमित ज्योति महराज ॥ ३ ॥
ज्योतिमूर्ति तम अपहहो जग चूड़ा मणि ईस ।
दीप्तः सर्वाविघ्न के विनासकः जगदीस ॥ ४ ॥
कलिघ्न विधि सत्रुघ्न हो लोक अलोक प्रकास ।
कर्त्ता अन निद्रालु तुम अनन्द्रालु सुख वास ॥५॥
जागरूक हो प्रभामय लक्ष्मीपति जग ज्योति ।
धर्म राज तुम प्रजा हित मुमुक्षु वांछक मुक्ति ॥ ६ ॥
बन्ध मोक्षज्ञ जिताक्षो जित मन्मथः प्रधान ।
प्रसान्तरस सैलूष हो त्रिभुवन पति भगवान ॥ ७ ॥
भव्य पेटकः नायकः कर्त्ता मूल महान ।
अखिल ज्योति हो मलघ्नो मूल कारणःजान ॥ ८ ॥
आप्त वागीश्वरः हो श्रेयान् छ्रायस उक्ति ।
नि उक्त वाक सु प्रवक्ता बच सामीसो मुक्ति ॥ ९ ॥
मार जित्सु विश्वभाव वित् सुतनुः तनु निर्मुक्त ।
सुगतो हत दुर्नय प्रभू श्रीसः तुम ही उक्त ॥ १० ॥
श्रीश्रित पादाब्जो प्रभू वीत भीर भगवान ।
भयंकरः उत्सन्न हो दोष हरण सु प्रधान ॥ ११ ॥
निर्विघ्नो तुम निश्चलो लोक वत्सलः ईस ।

धीर धी बुध सन्मार्गः शुद्धः तुम जगदीस ॥ १२ ॥
सूनृत पूत सुवाक् हो प्रज्ञा पार मिताः ।
प्राज्ञो यति नियमित सुतुम इंद्रिय महा पिताः ॥ १३ ॥
हो भदन्त तुम भद्र कृत भद्र कल्प सु वृक्ष ।
वरः प्रदः तुम भव्य को त्रिभुवन में प्रत्यक्ष ॥ १४ ॥
सुं उन्मूलित कर्म अरि कर्म काष्ट को आशु ।
सुक्षणि कर्मण्यः कर्मठः तीन भुवन में प्रांशु ॥ १५ ॥
हेयाहेय विचक्षणः अनन्त सक्ति अक्षेद्य ।
त्रिपुरारिः त्रैलोचनः त्रिनेत्रः सु अभेद्य ॥ १६ ॥
त्र्यम्बक त्रिअक्ष केवलः ज्ञान वीक्षणः एव ।
समन्त भद्रः सान्त अरि धर्माचार्य देव ॥ १७ ॥
दया निधिः तुम नाम हो सूक्ष्म दर्सी ईस ।
जित अनंग हो कृपालुः वृष देसक जगदीस ॥ १८ ॥
शुभंयूः सुख है प्रभु साभ्दूत भगवान ।
पुण्य रासि हो निरामय धर्मपाल जग जान ॥ १९ ॥
जगत्पाल तुम धर्म के साम्राज्य गुणवान ।
नायकदिग्वासादि शत नथमल नाम प्रधान ॥ २० ॥

इति श्री दिग्वासादिशतं ॥ १०० ॥

चौपाई ॥

समोसरण पति वक्ता वाणि । आगम कोविंद कहत वखान सम चित कर ध्यावत जो आप । हो पवित्रनर सो तज पाप ॥ १ ॥ अमित निरक्षर तुम ध्वनि ईस । तदपि प्रगट सु अर्थ जगदीस ॥ निरसन्देह जु स्तुति करें । सो अभीष्ट फल सहजे वरे ॥ २ ॥ तुमही वन्धु जगत में एक । तुम ही वैद्य जगत सु विवेक ॥ तुमही जगत् में ध्यावन योग ।

तुम अधितः जगमें सु मनोग ॥ ३ ॥ तुमही एक जग करत प्रकास। नाना - बिधि उपयोग बिकास। तुम रत्नत्रय है सिव रूप। सहित अनंत चतुष्टय भूप ॥ ४ ॥ तुम्ही पंच परमेष्टि गुणज्ञ। पंच कल्याणक नायक विज्ञ। षट बिधि भाव तत्त्व तुम सात। कहे सप्त नयजग विख्यात ॥ ५ ॥ वसु गुण सुन्दर मूर्तिवन्त। नव विधि केवल लब्धि धरन्त। दस भव धर शुभ जिनवर भये। तारो समें आय हम नये ॥ ६ ॥ तुम गुण मोला निर्मल येह। वनी स्तवन परम सनेह। ता प्रसाद सीजें सब काम। करो अनुग्रह तुम गुण धाम ॥ ७ ॥ यह स्तोत्र न भूले कदा। सो पवित्र नर जगमें सदा। जो यह पाठ पढे मतिमान। सो जानो भाजन कल्यान ॥ ८ ॥ जो पुण्यार्थी नित यह पढे। पुण्य बुद्धि ताके नित बढ़े। परम कल्याणकपावेसाय। सब अभिलाषा पूरण होय ॥९॥ करे स्तवन बासव एव ॥ तुम सब जगजीवो के देव ॥ तुम जब तीर्थ करत बिहार। व्याधा मिटे सब सन्सार ॥१०॥ तुम थुति गुण सुकृत विस्तरे। जो प्रसन्न मति भवि थुति करे ॥ तुम स्तुति हो निष्ठित अर्थ। सिव सुख पावे भव्य समर्थ ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

यह स्तुति त्रिजगेस की भव्य करे मन आप।
सो निर्मल मति खोल दृग देखे आप प्रताप ॥१२॥
जिस को योगीश्वर सदा ध्यावें निज चित धार।
सो त्रिलोक गुरु देव वर पावत कर निस्तार ॥१३॥
इंद्रादिक पद जास के अर्चें सो जगदीस।
घाति कर्म को नास कर होत केवली ईस ॥ १४ ॥
हैं अनंत चतु के धनी समो सरण श्री नाथ।

भवि सरोज को भास्कर नमों जोड़ युग हाथ ॥ १५ ॥
मानस्थंभ विलोक के नवत त्रिजग के ईश ।
यह विभूति बाहर तनी है अचिन्त्य जगदीश ॥ १६ ॥
है अनर्घ तुम भक्ति प्रभु बन्दो मन वच काय ।
सेवक नाथूराम पर कृपा करो जिन राय ॥ १७ ॥
भादो शुक्लाग्यारसी सम्बत शत उन ईश ।
उनसठ को स्तवन यह पूरो नावत शीस ॥ १८ ॥

॥ इति श्री भाषा जिनेन्द्र सहस्र नाम संपूर्णम् ॥

देव शास्त्र गुरु पूजा भाषा ॥
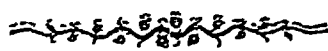
॥ अड़िल्ल छन्दः ॥

प्रथम देव अरिहंत तो श्रुति सिद्धांतजो । गुरु निर्गंथ महान्मुक्ति पुर पन्थ जी ॥ तोनरत्न जगमाहिं तो ये भवि ध्याइहों । जिन को भक्ति प्रसाद परम पद पाइहों ॥ दोहा पूजों पद अरिहंत के पूजों गुरुपद सार । पूजों देवी सरस्वती, नित प्रति अष्ट प्रकार ॥ ओं ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्योः । अत्र वत्र वतरः सम्वौ षटाह्वाननं ॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्न हितो भव भव विपट संधीस करणं ॥ अथाष्टकं ॥ गीता छन्द ॥ सुरपति उरग नरनाथ तिनकर बन्दनीक सुपद प्रभा । अति शोभनीक सुवर्ण उत्तम देख सब मोहित सभा ॥ भरि नीर क्षीर समुद्र घट भर अग्र तिन वहु विधि नचौं । अरिहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रंथ नित पूजा रचो ॥ दोहा ॥ मलिन बस्तु

हरिलेत सब, जलस्वभाव मल क्षीण । यासे पूजों परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ओं ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो: ॥ जलं ॥ ॥ १ ॥ ये त्रिजग उदर मझार प्राणी तप्त अति दुद्धर खरे। तिन अहित हरण सुवचन जिन के परम शीतलता भरे ॥ तिस भ्रमर लोभितघ्राण पावन सरस चन्दन घिसि सचों ॥ अरिहंत० ॥ दोहा ॥ चन्दन शीतलता करे, तप्त वस्तु परवीन । यासे० । सुगन्धं ॥ २ ॥ यह भव समुद्र अपार तारण के निमित्त सुविधि ठई । अति दृढ़ परम पावन यथार्थ भक्ति वर नौका सही ॥ उज्जिल अखण्डित सालि तन्दुल पुंजधर त्रयगुण जचों ॥ अरिहंत० ॥ दोहा ॥ तन्दुल सालि सुगन्ध अति, परम अखंडित वीन ॥ यासे० ॥ अक्षतं ॥३॥ जे विनयवन्तु सु भव्य उर अम्बुज प्रकाशन भानु हैं । जो एक मुख चारित्र भाषें त्रिजग माहिं प्रधान हैं ॥ लै कुन्द कमलादिक पहुप भव भव कुवेदन से बचों । अरिहंत० ॥ दोहा ॥ विविध भांति परिमल सुमन भ्रमर तास आधीन ॥ यासे पूजों० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥ अति सबल मद कन्दर्प जाको क्षुधा उरग अमान है । दुस्तर भयानक तास नाशन को सो गरुड़ समान है ॥ उत्तम छहो रस आन नित नैवेद्य कर घृत में पचों ॥ अरिहंत० ॥ दोहा ॥ नाना विधि संयुक्त रस, विंजन सरस नवीन ॥यासे०। नैवेद्यं ॥ ५ ॥ जो त्रिजग उद्यमनाश कीनो मोहतिमर महाबली । तिहि कर्म घाती जात दीप प्रकाश ज्योति प्रभावली ॥ यह भांतिदीप प्रजालकंचन के सुभाजन में खचों ॥ अरिहंत० ॥ दोहा ॥ स्वपर प्रकाशक ज्योति अति, मिथ्यातम कर हीन ॥ यासे पूजौं० ॥ दीपं ॥६॥ जो कर्म ईंधन दहन अग्नि समूह सम

उद्धत लसे । वर धूपतास सुगन्धता ।कर सकल परिमलता लसे ॥ यह भांति धूप प्रजालनित भवज्वलन माहिं नहीं त चों ॥ अरिहंत० ॥ दोहा ॥ अग्नि माहि परिमल दहौं, चन्दनादि गुणलीन ॥ यासे० ॥ धूपं ॥ ७ ॥ लोचन सुरसना घ्राण उर उत्साह के करतारहैं । मोपर न उपमा जाति वरणी सरस फल गुण सार हैं ॥ सो फल चढ़ावत अर्थ पूरण परम अमृत रस अचों ॥ अरिहंत० ॥ दोहा ॥ जो प्रधान फल फल विषैं, पंच करन रस लीन ॥ यासे पूजों०॥ फलं ॥ ॥८॥ जल परमउज्ज्वल गन्ध अक्षत पुष्प चरु दीपकधरों । वर धूप निर्मल फल विविध घर जन्म कृत पातिक हरों ॥ यह भांति सुकृत अनार कारण करण शिव पंकति मचों ॥ अरिहंत०॥ दोहा ॥ वसु विधि अर्घ संयोयकर अति उच्छाह मन कीन ॥ यासे० ॥ अर्घं ॥९॥ दोहा ॥ देव शास्त्र गुरु रत्न शुभ, तीन रत्न कर्त्तार । भिन्न २ करों आरती अल्प सुगम विस्तार ॥ पद्धड़ी छन्द ॥ चउकर्म तिरेसट प्रकृति नाशि । जीते अष्टादश दोष राशि ॥ ये परम सुगुरु अरिहंत धीर । वन्दों तिन छालिस गुण गंभीर ॥१॥ शुभ समोशरण शोभा अपार । शत इन्द्र नवें कर शीर्षधार ॥ देवाधिदेव अरिहंत देव । बन्दों मन बच तन करहु सेव ॥२॥ जिन की ध्वनि ओंकार रूप । निर अक्षर मय महिमा अनूप ॥ दश अष्ट महा भाषा समेत । लघु भाषा सात शतक सुचेत ॥३॥ सो स्याद्वाद मय सप्त भंग । गणधर गूंथें बारह सुअंग॥ रवि शशि न हरें सो तमहराय । सो शास्त्र नमों बहु प्रीति लाय ॥ ४ ॥ गुरु आचार्य उपझाय साधु । तन नग्न रत्न त्रयनिधि अगाधु ॥ संसार त्याग वैराग धार । निर्वांछ तपें शि-

वपद निहार ॥ ५ ॥ गुण छत्तिस पच्चिस अष्ट बीस । भव-तारण तरण जहाज ईश ॥ गुरु की महिमा वरणीन जाय। गुरु नाम जपों मन वचन काय ॥ ६ ॥ घत्ता ॥ सोरठा ॥ कीजे शक्ति समान शक्ति विना श्रद्धण ही । द्यानति श्रद्धा वान अजर अमर पद भोगवे ॥

॥ इति श्री देव शास्त्र गुरु पूजा सम्पूर्णम् ॥

विद्यमानबीसतीर्थंकरपूजा

॥ सोरठा ॥

विहर मान जिन बीस सीमंधर को आदिदे ।
मम मन हितं जगदीश अत्र आय तिष्ठो प्रभू ॥१॥

ओंह्रीं सीमन्धरादि बीस तीर्थंकरेभ्यो: । अत्र वत्र व-तर: संवौ षटा ह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट सन्निधी करणं । अथाष्टक । छन्द अष्टपदी होली की चाल में॥ क्षीरोदधि सम शुचि नीर शीत सुगन्ध धरै । भरि कनक भृंग गुण धीर पूजों मोद भरे । सीमंधरादि जिन बीस । तुम पद वन्दत हों । मेरो हरो जन्म मृत्यु टीश शिव सुख वांछतु हों । ओं ह्रीं श्री विदेह सम्बन्धी बीस तीर्थंकरेभ्यो: ॥ जलं ॥१॥ चन्दन घनसार मिलाय कुम कुम संग घसों । भव तपन मिटनके काज तुम करणों परसों । सीमंधरादि जिन बीस तुम पद वंदतु हों । मेरी हरो जन्म मृत्यु टीश शिव सुख वांछतु हों ॥ सुगन्धं ॥ २ ॥ सुखदास आदि बहु जाति सुवर्ण थाल भरों । भव उदधि तरण के काज तुम ढिग पुंज करों । सीमंधरादि जिन बीस तुम पद वन्दतु हों । मेरी

हरो जन्म मृत्यु टीश शिव सुख वांछतु हों । अक्षतं ॥ ३ ॥ सुर द्रुम से फूल अपार रंग सुगन्ध भरे । मेरो काम बाण निवार पूजत हर्ष धरे । सीमंधरादि जिन वीस तुम पद बन्दतु हों । मेरी हरो जन्म मृत्यु टीश शिव सुख बांछतु हों हों । पुष्पं ॥४॥ षटरस पूरित चरु सार कंचन थालभरों ले जजत तुम्हारे पाय रोग क्षुधादि हरों । सीमंधरादि जिन वीस तुम पद बन्दत हों । मेरी हरो जन्म मृत्यु टीश शिव सुख बांछतु हों । नैवेद्यं ॥५॥ मणि दीपक ज्योति जगाय तुम पद निकट धरी । हो स्वपर सुभेद प्रकाश नाशे मोह अरी । सीमंधरादि जिन बीस तुम पद बन्दत हों । मेरी हरो जन्म मृत्यु टीश शिव सुख बांछतु हों॥ दीपं ॥६॥ बसु गन्ध धूप वर खेय हेम धूपायन में । बसु बिधि खल जारन हेत हो सुख दायन में । सीमंधरादि जिन बीसतुम पद बन्दतु हों । मेरी हरोजन्म मृत्यु टीश शिव सुख वां-छतु हों । धूपं ॥ ७ ॥ षट ऋतु केफल अतिसार देखतमन मोहे । नाशा नयनों सुखकारथाल भरोसोहे । सीमंधरादि जिनबीस तुम पद बन्दतु हों । मेरी हरो जन्म मृत्यु टीश शिव सुख बांछतु हों । फलं ॥ ८ ॥ जल फल वसु द्रव्य मि-लाय कंचन थार भरों । दे पद अनर्घ जिनराय नवन सु भाल करों । सीमंधरादि जिन बीस तुम पद बन्दतु हों । मेरी हरो जन्म मृत्यु टीश शिवसुख बांछतु हों । अर्घं ॥९॥ छप्पय । सीमंधर को आदिदेय ये बीस जिनेश्वर । केवल ज्ञान विराजमान तिन के अविनीश्वर । रहित अठारह दोष सहित छालिस गुण राजत । चौसठ चमर ढुरंत तीन शिर क्षत्र विराजत । सुर असुर खगेश्वर नवत नित शक्र

चक्र अहमेंद्र नर । सो समोशरण लक्ष्मी सहित वन्दोंबीस जिनेंद्र वर । पूर्णार्घं । अथ जयमाल । चंडो वा तामरस छन्द । सोमंधर जिनराज नमस्ते । तारण तरण जहाज नमस्ते ॥ १ ॥ युगमंधर युगपाय नमस्ते । भव्यनि शिव सुख दाय नमस्ते ॥ २ ॥ जय जय बाहु जिनेंद्र नमस्ते । जाहि जपत मुनि वृंद नमस्ते ॥३॥ जय सुबाहु गुण राशि नमस्ते । लोका लोक प्रकाश नमस्ते ॥४॥ जय संजात जिनेंद्र नमस्ते । तुम पद नवत शतेंद्र नमस्ते ॥५॥ स्वयं प्रभुः स्वयं बोध नमस्ते । सदा वचन अविरोध नमस्ते ॥६॥ ऋषभानन ऋषि सेव नमस्ते । मिथ्यातिमर दिनेश नमस्ते अनन्त वीर्यभगवन्त नमस्ते । वीर्यादिक गुणाऽनन्त नमस्ते ॥८॥ सूर प्रभू जग जीत नमस्ते । जग जीवन के मीत नमस्ते ॥९॥ जय विशाल कीर्तेश नमस्ते । भविसुख उदधि निशीश नमस्ते ॥ १० ॥ वज्रः धर परमेश नमस्ते । मोह शैव वज्रेश नमस्ते ॥११॥ चन्द्रानन सुख दाय नमस्ते । भविकमोद विकशायनमस्ते ॥ १२ ॥ चन्द्रबाहु चन्दीश नमस्ते । मिथ्यातम रजनीश नमस्ते ॥१३॥ नाथ भुजंगम चरण नमस्ते । दुर्गति भेदज हरण नमस्ते ॥१४॥ जय ईश्वर जगदीश नमस्ते । सुर गण खग नर ईश नमस्ते ॥१५॥ नेम धर्म रथ नेम नमस्ते । मनवच तन कर प्रेम नमस्ते ॥१६॥ वीरसेन जगरक्ष नमस्ते । नाशक दुर्नय पक्ष नमस्ते ॥ १७ ॥ महा भद्र जिन राज नमस्ते । सब देवन शिरताज नमस्ते ॥१८॥ जय जय देव यशेश नमस्ते । यश गावत भुवनेश नमस्ते ॥१९॥ अजित वीर्यवर बल्ल नमस्ते । मोह मल्ल बल दल्ल नमस्ते ॥२०। पंच शतक धनु काय नमस्ते । कोटि पूर्व

वर आयु नमस्ते ॥ २१ ॥ उदयसुकेवल ज्ञाननमस्ते । गुण अनन्त को खाननमस्ते ॥ २२ ॥ द्विविधि धर्म उपदेश नमस्ते । भविजन उर परवेश नमस्ते ॥ २३ ॥ त्रिभुवनके भर्त्तार नमस्ते भवोदधि डूवति तार नमस्ते ॥२४॥ शिव सुख दे जिनराय नमस्ते । जांचतु हों शिरनाय नमस्ते ॥२५॥ घत्ता आनन्द छन्द । ये बीस जिनेंद्राकर्म निकन्दा हर दुःख फन्दा जिन चन्दा । भव व्यथा अपारो मेट हमारी हे जगतारी सुख कन्दा ॥१॥ हम पूजन आये तूर बजाये नाचेगाये बहु छन्दा । कर लुरक समाजं शिवपुर राजं हे जिन राजं गुण कन्दा ॥ २ ॥ महार्घं । अड़िल्ल छन्द । जो सीमन्धर आदि जिनेश्वर ध्याय है । मनवांछित फल सोजन निश्चय पाय है । पुत्रमित्र धन धान्य आदि सबही मिले ॥ सुर पद के सुखं भोग अनुक्रम शिव थले । इत्याशीर्वादः ॥

इति श्रीविदेह संबन्धीविद्यमान वीसतीर्थंकरपूजा सम्पूर्ण ॥

सिद्ध पूजा भाषा ॥

॥ दोहा ॥

ऊर्द्ध अधः रकार युत विंदी सहित हकार ।
सिद्धचक्र पूजों सदा अरि करि हर हरि हार ॥

ओं ह्रीं अनादि वेद असि आ उसा श्री सिद्धचक्राय अत्र वत्र वतरः संवौ षटाह्वाननं ॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव विषट संधोस करणं ॥ अथाष्टकं ॥ मोह महारिपु नाशिकेवर पायो सम्यक सार । यासे पूजों नोर से मिथ्यात्व तृषा निर्वार ॥ आज हमारे आनंद हैं ॥ मैं पूजों आठो द्रव्य से । तुम सिद्ध महा सुख-

दाय ॥ आठो कर्म विनाश के। लहे आठ सुगुण समुदाय ॥ आज हमारे आनंद हैं ॥ हम पाये मंगल चार। येही उत्तम लोक में ॥ इन हीं का शरणाधार ॥ आज हमारे आनंद हैं॥ ओं ह्रीं अनादि वेद असि आउसा श्री सिद्ध चक्राधिपतये-भ्योः ॥ जलं ॥ १ ॥ ज्ञानावरणी जीत के प्रगटोवर केवलज्ञान चंदन से पूजा करों अज्ञान तपनको हान ॥ आज हमारे आनंदहैं ॥ मैं पूजों० ॥ सुगंधं २ ॥ दरशन आवरणी हतो भयो दरश अनंत अपार। पूजों अक्षत लाय के औगुण तम हर गुणकार। आज हमारे आनंद हैं ॥ मैं पूजों०॥ अक्षतं३॥ अंतरायको घाति के उपजो अनंत बलसार। फूलन से पूजा करो प्रभु काम के वाण निवार ॥ आज हमारे आनंद हैं ॥ मैं पूजों० ॥ पुष्पं ४ ॥ कर्म वेदनो मिट गयो निरबाधा बाधा होन। अन्न छहो रस सों जजों मेरा रोग क्षुधा कर क्षीण ॥ आज हमारे आनंदहैं ॥ मैं पूजों०॥ नैवेद्यं ५॥ आयु कर्म को क्षय करो अवगाह अचल परकाश। पूजों दीप चढाय के करो भर्म तिमर को नाश ॥ आज हमारे आनन्द हैं ॥ मैं पूजौं० ॥ दीपं ६ ॥ नाम प्रकृति सब चूरि के भयेअमल अमूरति देव। धूपसुगन्धो खेय के सब कर्म जलें स्वय मेव ॥ आज हमारे आनन्द हैं ॥ मैं पूजों० ॥ धूपं ७॥ गोत्र कर्म सब तोड़ के प्रभु भये अगुरु लघुसार। फल धर पूजों भाव से लहों मनवांछित फल सार। आज हमारे आनन्द हैं। मैं पूजों० फलं ८ ॥ अर्घ करो उत्साह से नवों आठों अंग नवाय। आनन्द दौलत राम को प्रभू भव भव होउ सहाय ॥ आज हमारे आनन्द हैं॥ मैं पूजों० अर्घं ९ ॥ चार ज्ञानधर ना लखे हम देखे श्रद्धा वंत। जाने माने अनुभवे तुम राखो पास महंत ॥ आज हमारे आनंदहैं ॥ मैं पूजों०॥

पूणार्घं १० ॥ अथ जयमाल ॥ दोहा ॥ आठ कर्म दृढ़ बन्ध से नख शिख बंधो जहान । बन्ध रहित वसु गुण सहित नमो सिद्ध भगवान ॥ तोटकछंद ॥ सम्यग्दर्शन वर ज्ञान धरं । बल अगुरु लघुः अरु बाध हरं ॥ अवगाह अमूरति नायक हो । सव सिद्ध नमों सुखदायक हो ॥ १ ॥ अनलं अचलं अतुलं अटलं । अमनं अमलं अतलं अकलं । अजरं अमरं अघक्षाय कहो ॥ सब सि० २ ॥ निरभोग स्वभोग अराग परं । निरयोग अयोग वियोग हरं । अरसं सुरसं सुख दायक हो ॥ सब सि० ३ ॥ सब कर्म कलंक अटंक अजं । नरनाथ सुरेश समूह जजं । मुनि ध्यावत सज्जन क्षायक-हो ॥ सब सि० ४ ॥ अविरुद्ध विशुद्ध प्रबोध मयं ॥ सब जानत लोकालोक चयं । परमं धरमं शिवलायकहो । सब सि० ५ ॥ निरबन्ध अवंध अगंध परं । निर्भय निरक्षय निर्णय अधरं ॥ निररूप अनूप अकायकहो ॥ सब सि० ६ ॥ निरभेद अखेद अछेद लहा । निरद्वन्द सुछन्द अफंदमहा ॥ अक्षुधा अतृषा अकषायक हो ॥ सब सि० ७ ॥ अयमं अतमं अगमं कहियं । अगमं सुगमं सुसुखं लहियं ॥ यमराज की चोट बचायक हो ॥ सब सि० ८ ॥ निरधाम स्वधाम सुबोध युतं । अपहार निहार अहार चुतं ॥ भय नाशन तीक्ष्ण शायक हो ॥ सब सि० ९ ॥ निरवर्ण अकर्ण दशा धरतं । अगतं अमतं अक्षतं अरतं । अति उत्तम भाव सु क्षायक हो ॥सब सि० १० ॥ विन रंग असंग अभंग सदा । अतयं अवयं अजयं सुखदा ॥ अमदं अगदं गुणदायक हो । सब सि० ११ ॥ अविषाद अनाद अवाद वरं । भगवंत अनन्तानन्त तरं ॥ तुम देव महारवि ध्यायक हो । सब सि० १२॥

निरदेप अनेह अगेह सुखो । निरमोह अकोह अलोहलुपी॥ तिहूं लोक के नायक पायक हो । सब सि० १३॥ पन्द्रह सौ भाग महान बसे । नव लाख के भाग यघन्य लसे ॥ तन बात के अन्त सहायक हो ॥ सब सिद्ध नमो० । १४॥ घत्ता ॥ दोहा ॥ बसु विधि चूर्ण कर लिये वसु गुण शुचि व्यवहार । ऐसे सिद्ध समूह को नमों त्रियोग सम्हार ॥

इति श्री सिद्ध पूजा समाप्तम् ॥

सिद्धपरमेष्ठी भावपूजा ॥

॥ दोहा ॥

परमपूज्य परमात्मा पूजक चेतन भाव । सहज सिद्ध पूजों सदा भक्ति भाव चितचाव ॥ १ ॥ ओं ह्रीं सहज सिद्धेभ्यो: अत्र वत्रवतर: संबोषटाह्वाननं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्रममसन्निहितो भव भव वषट संधीस करणं ॥ अथाष्टकम् ॥ दोहा ॥ मन निर्मल भाजन विषें समरस निर्मलनीर । सहज सिद्ध पूजों सदा काके तृषा शरीर । ओं ह्रीं सहज सिद्धेभ्यो: ॥जलं १॥ चन्दन शीतल ज्ञानपद केसर ज्ञायक भाव । सहज सिद्ध पूजों सदा कहा तपन को दाव ॥ सुगन्धं ॥२॥ गुण अखण्ड तंदुल अमल गुणी आत्माराम । सहज सिद्ध पूजों सदा महा सुगुण के धाम ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥ निश्चय शील स्वभाव जो सो सुगन्ध मय फूल । सहज सिद्ध पूजों सदा काको मन्मथ शूल ॥ पुष्पं ॥४॥ परम अतीन्द्रिय सुख सुधा सो कहिये नैवेद्य । सहज सिद्ध पूजों सदा किसे क्षुधा का खेद ॥ नैवेद्यं ५ ॥ ज्ञान ज्योति दीपक

महा करे सुस्वपर प्रकाश। सहज सिद्ध पूजों सदा कहां तिमर अवकाश ॥ दीपं ६ ॥ ध्यान अग्नि में कर्म सब खेऊं धूप सुवास। सहज सिद्ध पूजों सदा कौन वसे भववास ॥ धूपं ॥ ७ ॥ सम्यक् रत्नत्रय महा सुफल मुक्ति फल रूप। सहज सिद्ध पूजों सदा किन को विघ्न अनूप ॥ फलं ८ ॥ आठो गुण क्षायक सहित यही अर्घ अविकार। सहज सिद्ध पूजों सदा द्यानत द्यानत दार ॥ अर्घं ९ ॥ पूजक पूजा पूज्य फल साधक साधन साध्य। सेवक सेवा सेव्य भवि द्यानति एक समाधि ॥ पूर्णार्घं १० ॥ जयमाल ॥ दोहा ॥ आठ कर्म विन सिद्ध हैं आठो गुण भण्डार। आठ द्रव्य से आरती करों आठ गुणधार १ ॥ चौपाई ॥ शुद्ध स्वरूप एक पदराजे। एक भाव संसार न छाजे ॥ सिद्ध समूह अखिल अविकारी। मन वच तन वन्दना हमारी ॥२॥ दर्शन ज्ञान उभय मयसोई। जन्मन मरण कदापि न होई सिद्ध समूह अखिल अविकारी। मनवचतन वन्दनाहमारी ॥३॥ आप ज्ञान मय ज्ञाता स्वामी। राग विरोध विमोह न नामी ॥ सिद्धसमूह अखिल अविकारी। मन वच तन वन्दना हमारी ॥ ४ ॥ द्रव्यादिक चारों अविनाशी। चार कषाय रहित सुखवासी ॥ सिद्ध समूह अखिल अविकारी। मन वच तन वन्दना हमारी ॥५॥ पांचो भाव सास्वते धारे। पंच परावर्तन से न्यारे ॥ सिद्ध समूह अखिल अविकारी। मन वच तन वन्दना हमारी ॥६॥ स्वगुण अगुरु लघु षट गुण धारी। छहो काय परणति सब टारी ॥ सिद्ध समूह अखिल अविकारी। मन वच तन वन्दना हमारी ॥७॥ सातो भंग सधे बड़भागी। सात तत्व भावन के त्यागी ॥ सिद्ध समूह अ-

खिल अविकारी । मन वच तन वन्दना हमारी ॥८॥ अस्त वस्त आठो गुण ज्ञानी । आठो ऋद्धि तजो सुखदानी ॥ सिद्ध समूह अखिल अविकारी । मन वच तन वन्दना ह- हमारी ॥९॥ घत्ता ॥ सोरठा ॥ नयनों सेती दूर श्रद्धा हृदय नजीक हैं । द्यानति भक्ति हुजूर एक मेक से हो रहे ॥१०॥ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इतिश्री सिद्ध पूजा सम्पूर्ण ॥

सोलहकारण पूजा ॥

* अड़िल्ल छन्द *

सोलह कारण भाय के तीर्थंकर भये । हर्षे इन्द्र अपार मेरु पर ले गये ॥ पूजा कर निज धन्य लखो वहु चाव सों । हमहूं षोड़श कारण भावैं भावसों ॥ ओं ह्रीं दर्शन विशु-द्धादि षोड़स कारणेभ्यो । अत्र वत्रवतरः सम्वौ षटाह्वाननं ॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव विषट सन्धीस करणं ॥ अथाष्टकं ॥ हंसी छन्द ॥ कं-चन झारी निर्मल नीर। पूजों जिनवर गुण गम्भीर । परम गुरु हो । जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ दरश विशुद्ध भा-वना भाय । सोलह तीर्थंकर पद पाय । परम गुरु हो । जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ ओं ह्रीं दर्शन विशुद्धादि षोडस कार, णेभ्योः ।जलं १ ॥ चन्दन घिसि कर्पूर मिलाय । पूजों श्री जिनवर के पांय॥ परम० ॥ सुगन्धं ॥२॥ तन्दुल धवल अ-खण्ड अनूप । पूजैं जिनवर तिहुं जग भूप॥ परम० ॥ अ-क्षतं ३॥ फूल सुगन्ध मधुप गुंजार॥ पूजों जिनवर जग

आधार ॥ परम०॥ पुष्पं ॥४॥ सद नेवज बहु विधि पकवान । पूजों श्री जिनवर गुणखान॥ परम०॥ नैवेद्यं ५ ॥ दीपक ज्योति तिमर क्षयकार। पूजों श्री जिन केवल धार ॥ परम० दीपं ६ ॥ अगर कर्पूर गन्ध शुभ खेय ॥ श्री जिनवर आगे मह केय ॥ परम०॥ धूपं ७॥ श्री फल आदि बहुत फलसार। पूजो जिन वांछित दातार ॥ परम० ॥ फलं ॥ ८ ॥ जल फल आठो द्रव्य चढ़ाय ॥ द्यानति भक्ति करीं मनलाय ॥ परम०॥ अर्घं ॥ ९ ॥ अथ जयमाल ॥ दोहा॥ षोड़स कारण गुण करे हरे चतुर्गति वास । पाप पुंज सब नाश के ज्ञान भानु परकाश ॥ १ ॥ दुति मध्यकं वा वेसरी छंद १६ मात्रा ॥ दरश विशुद्ध धरे जा कोई । ताका आवागमन न होई । विनय महा धारे जो प्राणी । शिव बनिता की सखो बखानी ॥२॥ शीलसदादृढ़ जो नर पाले । सो औरोंकी आपद टाले ज्ञानाभ्यास करे मन माहीं । ताके मोह महातमनाहीं ॥३॥ जो संवेग भाव विस्तारे । स्वर्ग मुक्ति पथ आप निहारे ॥ दान देय मन हर्ष विशेषे । यह भव यश परभव सुख देखे ॥ ४ ॥ जो तप तपे क्षिपे अभिलाषा । चूरे गर्भ शिखर गुरु भाषा ॥ साधु समाधि सदा मन लावे । तिहुं जग भोग शिव पोवे भोंग ॥५ ॥ निशि दिन वैयावृत्य करैया । सो निश्चय भव नीर तरैया ॥ जो अरिहंत भक्ति मन ल्यावे । सो नर मन बांछित पद पावे ॥६॥ जो आचार्य भक्ति करे है । सो निर्मल आचार धरे है ॥ बहु श्रुतवंत भक्ति जो करई । सो नर सम्पूर्ण श्रुत धरई ॥७॥ प्रवचन भक्ति करे जो ज्ञाता । लहैं ज्ञान परमानंद दाता ॥ षट् आवश्यक काल जो साधे । सो ही रत्न त्रय आराधे ॥ ८ ॥ धर्म प्रभाव करेजो

ज्ञानी । तिनशिवमार्ग रीति पिचानी ॥ वात्सल्यांग सदा जो ध्यावे । सो तीर्थंकर पदवी पावे ॥ ९ ॥ घत्ता ॥दोहा॥ येही सोलहभावना सहित धरे व्रत जोइ । देव इंद्र नरवंद्य पद द्यानति शिव सुख होइ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति श्री सोलहकारण पूजा सम्पूर्ण ॥

दशलक्षण पूजा ॥

॥ अड़िल्ल छन्द ॥

उत्तम क्षमा मार्द्दव आर्य्यव भाव हैं । सत्य शौचय संयम तप त्याग उपाव हैं ॥ आकिंचन ब्रह्मचर्य धर्म दश सारहैं । चहुगति दुःख से काढ़ि मुक्तिकरतार हैं ॥ ओं ह्रीं उत्तम क्षमादि दश लक्षण धर्मांगाय अत्रवत्र वतरः संवौ-षटाह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं अत्र मम स-न्नाहतो भव भव विषट संधीस करणं ॥ अथाष्टकं ॥सोरठा॥ हेमा चल की धार, मुनि चित सम शीतल सुरभि । भव आताप निवार, दशलक्षण पूजों सदा ॥ ओं ह्रीं उत्तम क्षमादि दशल क्षण धर्मांगाय ॥ जलं १॥ चंदन केसरिगारि, होइ सुवास दशो दिशा । भव आताप० ॥ सुगंधं २ ॥ अमल अखण्डित सार, तंदुल चंद समान शुभ । भव आताप० ॥ अक्षतं ३ ॥ फूल अनेक प्रकार, महकें ऊर्ध्व लोक लों । भव आताप० ॥ पुष्पं ४ ॥ नेवज बिविधप्रकार उत्तम षट रस संयुतं ॥ भव आताप० नेवेद्य ५ ॥ वाति कपूर सुधार, दीपक ज्योति सुहावनो ॥ भव आताप० ॥दीपं ६ ॥ अगर धूप विस्तार फेले सर्व सुगं-

धता ॥भव आताप०॥ धूपं ७॥ फल की जाति अपार, घ्राण नयन मन मोहनी ॥ भव आताप० ॥ फलं ८ ॥ आठो द्रव्य सम्हार, द्यानति अधिक उछाह से ॥भव आताप०॥अर्घं ९ ॥ जयमाल ॥ सोरठा ॥ पीड़ें दुष्ट अनेक बांध मारबहु विधि करें। धरिये क्षमा विवेक कोप न कीजै प्रीतम: ॥ वेसरी छन्द ॥ उत्तम क्षमा गहोरे भाई। यां भव यश पर भव सुख दाई ॥ गाली सुन मन रोश न आनो । गुण को औगुण कहें अजानो ॥ गीता छन्द ॥ कहें अजानो वस्तु छीने बंध मार बहु विधि करें। घर से निकारें तन विदारें बैर तो न तहां धरे ॥ जो कर्म खोटे किये पूर्व सहे क्यों नहीं जीयरा ॥ अतिक्रोध अग्नि बुझाउ प्राणी शांति जल ले सीयरा ॥ ओं ह्रींउत्तमक्षमा धर्मांगायअर्घ्योः ॥ अर्घं १ ॥ अथमार्द्दवांग ॥ सोरठा ॥ मान महा विषरूप करै नीचगति जगति में। कोमल सुधा अनूप सुख पावे प्राणी सदा ॥ वेसरि छंद ॥ उत्तम मार्द्दव गुण मन माना। मान कर्म का कौन ठिकाना॥ वसा निगोद मांहि से आया। दमड़ी रूकन भाग विकाया ॥ गीता छन्द ॥ भाग निविकाया कर्म वश से देव ए-केन्द्री भया । उत्तम मुआ चांडाल हूवा भूप कीड़ी में गया। जीतव्य यौवन धन गुमान कहा करे जल बुद बुदा। कर विनय वहु गुण बड़े जिन की ज्ञानका पावे उदा ॥ ओं ह्री उत्तम मार्द्दव धर्मांगाय म्योः ॥ अर्घं ॥ २ ॥ अथार्यवांग ॥ सोरठा ॥ कपट न कीजे कोइ चोरन के पुर ना वसे। सरल स्वभावी होइ ताके घर बहुसम्पदा ॥ ॥ वेसरी छंद ॥ उत्तम आर्यव रीति वखानी। रंचक दगा वहुत दुःख दानो। मन से होइ सो वचन उचरिये। वचन

होइ सो तन से करिये ॥ गीता छंद ॥ करिये सरल तिहूं योग अपने देख निर्मल आरसी । मुख करे जैसा लखे तैसा कपट प्रीति अंगारसी । नहीं लहे लक्ष्मी अधिक छल कर कर्म बन्ध विशेपता । भय त्याग दूध बिलाव पीवे आपदा नहीं देखता ॥ ओं ह्रीं आर्यव उत्तम धर्मांगायभ्योः अर्घं ॥ ३ ॥ अथ सत्यांग ॥ सोरठा ॥ कपट बचन मत बोल पर निन्दा और झूठ तज । सत्य जवाहर खोल सत्यवादी जगमें सुखो ॥ वेसरी छंद ॥ उत्तम सत्य विरत पालिज्जय । पर विश्वासघातनाकिज्जय ॥ सांचै झूठे मानव देखो । आम्रन पूत सुपासन पेखो ॥ गीता छंद ॥ पेखो निहायत पुरुष सांचे कोंद्रव्य सब दीजिये । मुनिराज श्रावक की प्रतिष्ठा सत्यगुण लख लीजिये ॥ ऊंचे सिंहासन बैठ बसु नृप धर्म का भूपति भया । बसु झूठ सेतो नर्क पहुंचा स्वर्ग में नारद गया ॥ ओं ह्री उत्तस सत्यधर्मांगायभ्योः ॥ अर्घं ॥४ ॥ अथ शौच्य धर्मांगाय ॥ सोरठा ॥ धारि हृदय सन्तोष करो तपस्या देह से । शौच्य सदा निर्दोष धर्म बड़ो संसार में ॥ वेसरी छंद ॥ उत्तम शौच्य सर्व जग जाना । लोभ पाप का बाप बखाना ॥ आशा फांस महादुःख दानी । सुख पावे सन्तोषी प्राणी ॥ गीता छंद ॥ प्राणीसदा शुचि शील जपतप ज्ञान ध्यान प्रभाव से । नित गंगयमुना समुद्र न्हावे अशुचिदोष स्वभाव से ॥ ऊपर अमल मधुभरी भीतर कौन विधि घट शुचि कहैं । वहु देह मैली सुगुण थैली शौच्य गुण साधू लहैं ॥५॥ ओंह्रीं शौच्य धर्मांगायभ्योः॥ अर्घं ॥५॥ अथ संयमांग ॥ ॥सोरठा॥ काय छहो प्रतिपाल पंचेन्द्री मन वश करो । संयम रत्न सम्हाल विषय चोर बहु फिरत हैं ॥ वेसरी छंद॥

उत्तम संयम गहु मन मेरे । भव भव के भाजें अघ तेरे ॥ स्वर्ग नर्क पशुगति में नाहीं । आलस हरण करण सुख ठाहीं ॥ गीता छंद ॥ ठाहीं मही जल अग्नि मारुत रूखत्रस करुणा करो । स्पर्शरशना घ्राण नयना कान मन सब बश करो । इस बिन नहीं जिनराज सीझै तू रुलो जगकीच में । एक घड़ी मत विसरो भविक जन आयु जम मुख बीच में ॥ ओं ह्रीं उत्तम धर्मांगायभ्योः अर्घं ६॥ अथ तपांग ॥सोरठा॥ तप चाहें सुरराय कर्मशिखर को वज्र है । द्वादश विधि सुखदाय क्यों न करे निज शक्ति सम॥ बेसरीछन्द॥ उत्तम तप सब मांहि बखाना । कर्म शैल को बज्र समाना ॥ बसो अनादि निगोद मझारा । भू विकलत्रय पशुतन धारा ॥ गीतांछन्द ॥ धारा मनुष तन महा दुर्लभ सुकुल आयु निरोगता । श्रीजैन वाणी तत्त्वज्ञानी भई विषय पयोगता ॥ अति महादुर्लभ त्याग विषय कषायये तप आदरे॥ नर भव अनूपम कनक घर पर मणि मई कलशा धरें ।ओं ह्रीं उत्तम तप धर्मांगायभ्योः ॥ अर्घं ॥ ७ ॥ अथ त्यागांग ॥ सोरठा ॥ दान चार परकार चार संग को दीजिये । धन विजुली उनहार नर भव लाहो लीजिये ॥ वेसरी छंद ॥ उत्तमत्याग कहो जग सारा । औषधि शास्त्र अभय आहारा ॥ निश्चय रागद्वेष निरवारो । ज्ञाता दोनों दान सम्हारो ॥गीताछंद॥ दोनों सम्हारो कूप जल सम द्रव्य घर में परिनयो । निज साथ दीजे साथ लीजेखाय खोयो वह गयो ॥ आहार औषधि शास्त्र अभयरु त्याग राग विरोध को । बिन दान श्रावक साधुदोनों लहैं नाहीं बोधको ॥ ओं ह्रीं त्याग उत्तम धर्मांगायभ्योः ॥ अर्घं ८॥ अथाकिंचनांग। सोरठा ॥ परिग्रह

चौवीस भेद त्याग कहो मुनिराज ने। तृष्णा भाव उछेद घटतो जान घटाइये॥ बेसरी छन्द॥ उत्तम आकिंचन गुण जानो। परिग्रह चिंता ही दुःख मानो॥ फांस तनकसी तन में साले। चाह लंगोटी की सुध भाले॥ गीता छंद॥ भाले न समता सुख कभी ही विनामुनि मुद्राधरें। धन्य नगन * पर तन नग्न ठाढे सुर असुर पायनपरें॥ घरमाहिं तृष्णो जो घटावें रुचि नहीं संसार से। बहुधन भलाहू बुरा कहिये लीन पर उपकार से॥ ओं ह्रीं आकिंचन धर्मांगायभ्यो: अर्घं॥ ९॥ अथ ब्रह्मचर्य॥ धर्मांग सोरठा॥ शीलवाडि नवराख ब्रह्मभाव अन्तर लखो। कर दोनों अभिलाप करो सफल नरभव सदा॥ बेसरी छन्द॥ उत्तम ब्रह्मचर्य मनआनो। माता बहिन सुता पहिचानो॥ सहें बांण वर्षा बहुसूरे। टिकें न नयन बांण लख कूरे॥ गीता छन्द॥ कूरे त्रियाके अशुचि तनमे काम रोगी रुचि करें। बहु सड़े मृतक समान माही काकहो चोंचें भरें। संसार में विप वेलि नारी तज गये योगीश्वरा। द्यानति धर्म दश पेंड चड़के शिव महल में पदधरा॥ ओं ह्रीं ब्रह्मचर्य धर्मांगायभ्यो:॥ अर्घं॥ समुच्चय जयमाल॥ दोहा॥ दश लक्षण वन्दों सदा मन वांछित फलदाय। कहूं आरती भारती हम पर होउ सहाय॥ बेसरी छंद॥ उत्तम क्षमा जहां मन होई। अन्तर्बाहर शत्रुनकोई॥ उत्तम मार्दव विनय प्रकाशे। नाना भेद ज्ञान सब भाशे॥ २॥ उत्तम आर्यव कपट मिटावै। दुर्गति त्याग सुगति उप जावै॥ उत्तम सत्य वचन मुख बोले। सो प्राणी संसार न डोले॥ ३॥ उत्तम सौच्य लोभ परिहारी। सन्तोषी गुण

* नगन=पर्वतन

रत्न भण्डारी ॥ उत्तम संयम पाले ज्ञाता । नर भव सफल करे लहि माता ॥ ४ ॥ उत्तम तप निर्वांछित पाले । सो नर कर्म शक्ति को टाले ॥ उत्तम त्याग करे जो कोई । भोग भूमि सुर शिव सुखहोई ॥ ५ ॥ उत्तम आकिंचन व्रत धारे । परम समाधि दशा विस्तारे ॥ उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावे । नर सुर सहित मुक्तिपदपावे ॥ ६ ॥ घत्ता ॥ दोहा ॥ करे कर्म की निर्जरा भव पिंजराविनाश । अजर अमर पद को धरे घानति सुखकी राशि ॥ ७ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

॥ इति दश लक्षण धर्म पूजा सम्पूर्णम् ॥

अथ स्वयंभू स्तोत्रं ॥

॥ चौपाई ॥

राज्यविषे युगलनिसुख दियो । राजत्यागि भवि शिव पद लियो ॥ स्वयंबुद्ध स्वयंभू भगवान । बन्दों आदि नाथ गुण खान॥१॥इन्द्रक्षीर सागर जल ल्याय । मेरु न्हेलाये गाय ब-जाय ॥ मदन बिनाशक सुख करतार । बन्दोंअजित अजित पदकार ॥ २ ॥ शुक्ल ध्यान धर कर्म बिनाशि । घाति अघा-ति सकल दुःखराशि। लहो मुक्ति पद सुख अविकार । बन्दों संभव भव दुःखटार ॥ ३ ॥ माता पश्चिम रैन मझार । स्व-प्ने सोलह देखेसार ॥ भूप पूछ फल सुन हर्षाय। बन्दों अ-भिनन्दन मन ल्याय॥ ४ ॥ सब कुवाद वादी सरदार। जीते स्याद्वादध्वनिधार ॥ जैन धर्म सुप्रकाशक स्वामि । सु-मति देव पद करों प्रणाम ॥ ५ ॥ गर्भ अगाड़ी धन पति आय । करी नगर शोभा अधिकाय ॥ वर्षाये मणि पन्द्रह

मास । नमो पद्मपद सुखकी राश ॥ ६ ॥ इन्द्रफनींद्र नरेंद्र त्रिकाल । वाणी सुन सुन होत खुशाल । बारह सभा ज्ञान दातार । नमों सुपारस नाथ निहार ॥ ७ ॥ सुगुण छिया-लिश हैं तुम मांहिं । दोष अठारह कोई नाहिं ॥ मोह म-हातम नाशक दीप । नवों चन्द्र प्रभ रखो समीप ॥ ८ ॥ बारह विधि तप कर्म विनाशि । तेरह विधि चारित्र प्रका शि ॥ निज अनेच्छ भवि इच्छक दान । वन्दों पुष्पदन्त मन आन ॥ ९ ॥ भवि सुखदाय स्वर्ग से आय । दश विधि धर्म कहों समझाय । आपसमान सबन सुख देह । वन्दों शी तल धर मन नेह ॥ १० ॥ समता सुधा कोप विष नाश । द्वादशांग वाणी सुप्रकाश ॥ चार संग आनन्द दातार । नमो श्रेयांश जिनेश्वर सार ॥ ११ ॥ रत्नत्रय शिर सुकुट विशाल । शोभे कंठ सुगुण मणिमाल ॥ मुक्ति नारि भर्त्ता भगवान । वास पूज्य बन्दो धरि ध्यान ॥ १२ ॥ परम स माधि सुरूप जिनेश । ज्ञानी ध्यानी हित उपदेश ॥ कर्म ना-नाशि शिव सुख विलसंत । वन्दों विमल नाथ भगवंत ॥ १३ ॥ अन्तर्वाहर परिग्रह डार । परम दिगम्बर व्रत को धार ॥ सर्व जीवहित राह दिखाय । नवों अनन्त वचन मनकाय ॥ १४ ॥ सातत्त्व पंचास्तिकाय । अर्थनवो छहद्रव्य सुभाय ॥ लोका लोक सकल सुप्रकाश । बन्दों धर्म नाथ अघनाश ॥ १५ ॥ पंचम चक्र वर्ति निधि भोग । कामदेव द्वादशम मनोग ॥ शी-लकरन सोलम जिनराय । शांतिनाथ बन्दों हर्षाय ॥ १६ ॥ बहुथुति करें हर्ष ना होय । निंदे दोष धरे नो सोय । शीलवा न परब्रह्मसरूप ॥ बन्दो कुंथु नाथ शिव भूप ॥ १७ ॥ बारह गण पूजें बहु भाय । थुति बंदना करे अधिकाय ॥ जाकी

निज श्रुति कहो न होय। नवों अरह जिन वर पद दोय॥१८॥ पर भव रत्नत्रय अनुराग। इस भव व्याह विषैं वैराग॥ वाल ब्रह्मपूरणव्रतधार। वन्दों मल्लिनाथजितमार॥ विन उपदेश स्वयंवैराग। थुति लौकंतककी पद्लाग॥ नमः सिद्ध कहके व्रत लयो। वंदों मुनि सुव्रतव्रत दयो॥ २०॥ श्रावक विद्या वंत निहार। भक्तिभाव से दयो अहार॥ वर्षै रत्नराशि तत्काल। वन्दों नमि प्रभु दीनदयाल॥ २१॥ सव जीवों के वन्दी छोड़। राग द्वेष दोवन्धन तोड़॥ रजमति तज शिव त्रियको मिले। नेमनाथ वन्दों सुख निले॥ २२॥ दैत्य कियो उपसर्ग अपार। ध्यान देख आयोफन-धार॥ गयो कमठ शठ मुखकर श्याम। नमों मेरु सम पारस स्वाम॥ २३॥ भव सागर से जीव अपार। धर्म पोत में धरे निहार॥ डूवत काढ़े दया विचार। वर्द्धमान वन्दों वहुवार॥ २४॥ दोहा॥ चौवीसो पद कमल युग वन्दों मन वचकाय। द्यानत पढ़े सुने सदा सो प्रभु क्यों न सुहाय॥ २५॥

इति श्री स्वयम्भूस्तोत्र संपूर्णम्॥

पंचमेरुपूजा॥

गीताछंद

तीर्थंकरोके न्हौन जलसे भये तीर्थ सर्वदा। यासे प्रदक्षणा देत सुरगण पंच मेरुन की सदा॥ दो जलधि ढाई द्वीप में सव गणत मूल विराजही। पूजों असी जिनधाम प्रतिमा होंय सुख दुःख भाजहीं॥ओं ह्रीं पंचमेरु सम्वंधी अस्सी जि-नालयेभ्योः॥ अत्र वत्र वतरः सवौ षटाह्वाननं। अत्र तिष्ट

तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव विपट संधोस करणं ॥ अथाष्टकं ॥ चौपाई ॥ शीतल मिष्ट सुवासित लाय। जलसे पूजों श्रीजितराय ॥ महा सुख होय। देखे नाथ महासुख होय ॥ पांचोमेरु असी जिनधाम। सब प्रतिमाजीको करों प्रणाम॥ महासुख होय। देखे नाथ महासुख होय ॥ ओंह्रीं पंचमेरु सम्बन्धो अस्सी जिनालयेभ्योः ॥ जलं १॥ जलकेसर कर्पूर मिलाय। चन्दन से पूजो जिनराय ॥ महा० ॥देखै०॥ पांचो० सुगंधं ॥ २ ॥ अमल अखंड सुगंध सुहाय। अच्छतसे पूजों जिनराय ॥ महासुखहोय ॥देखे०॥ पांचो० अक्षतं ॥३॥ वर्ण अनेकरहे महकाय ॥ फूलोंसे पूजों जिनराय ॥ महासुखहोय ॥ देखे० ॥ पांचो० ॥ पुष्पं ।४॥ मन बांछित बहु तुरत बनाय ॥ नेवज से पूजो जिनराय ॥ महासुखहोय ॥ देखे०॥ पांचो०॥ नैवेद्यं ५॥ तमहर उज्ज्वल ज्योतिजगाय ॥ दीपकसे पूजों जिनराय॥ महासुखहोय ॥ देखे० ॥ पांचो० ॥ दीपं ६ ॥ खेऊं अगर अनल अधिकाय। धूपसे पूजों श्रीजिनराय ॥ महासुख होंय । देखे० ॥ पांचो० ॥ धूपं ॥ ७ ॥ सरस सुगन्ध सुवर्ण सुहाय। फलसे पूजों श्री जिनराय ॥ महासुख होय। देखे० ॥ पांचो० ॥फलं ८॥ अष्ट द्रव्यमय अर्घबनाय॥ द्यानति भक्ति करों जिनराय। महा सुख होंय ॥ देखे० ॥पांचो० ॥ अर्घं ९॥ जयमाल ॥ सोरठा ॥ प्रथम सुदर्शन मेरु विजय अचल मन्दिर कहे। विद्युन्माली फेर पंच मेरु जगमे प्रगट ॥ वेसरी छंद॥ प्रथम सुदर्शन मेरु बिराजे। भद्र सालि वन भूपर राजे ॥ चैत्यालय चारों सुख कारी। मन बच तन बन्दना हमारी १ ॥ ऊपर पांच शतक पर सोहे। नन्दन वन देखत मन मोहे ॥ चैत्यालय० २ ॥ साढ़े

बासठ सहस उंचाई । वन सौमनस शोभ अधिकाई ॥ चैत्यालय० ३ ॥ ऊंचो योजन सहस्र छत्तीस। पांडुकवन शोभे गिरि शीश। चैत्यालय चारों० ४॥ चारों मेरु समान बखानो। भूपर भद्रसालि चौ जानो॥ चैत्यालय सोलह सुखकारी। मन० ५ ॥ ऊंच पांच शतक पर सोहें। नन्दन वन चारों मन मोहें॥ चैत्यालय० ६ ॥ साढे पचपन सहस्र उतंग। वन सौ मनस चारि वहुरंग ॥ चैत्यालय० ७ ॥ ऊंचे सहस्र अट्ठाइस भाई। पाण्डुक वन चारों सुखदाई॥ चैत्यालय० ८ ॥ सुर नर खग सव बन्दन आवें। सो शोभा हम किं मुखगावें॥ चैत्यालय अस्सी सुखकारी। मन वच तन व न्दना हमारी ९ ॥ घत्ता ॥ सोरठा ॥ पंच मेरु की आरती पढ़े सुने जो कोइ ॥ द्यानति फल जाने प्रभू तुरत महासुख होइ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

॥ इति पंच मेरु पूजा सम्पूर्णम् ॥

रत्नत्रय पूजा प्रारंभ्यते।

॥ दोहा ॥

चहुंगति फन विषहरण मणि दुःख पावक जल धार। शिव सुख सुधा सरोवरी सम्यक रत्न निहार। ओं ह्रीं सम्यक रत्नत्रयेभ्यो: अत्रावत्र वतर: सम्वौ षटाह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ: ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्न हितो भव भव विषट संधीस करणं ॥ अथाष्टकं ॥ सोरठा ॥ क्षीरो दधि उनहार उज्जल जल अति सोहनो। जन्मरोग निवार सम्यक रत्नत्रय जजों। ओंह्रीं सम्यक् रत्नत्रयेभ्यो: ॥जलं॥१॥ चन्दन केसरि-गार परिमल महा सुगन्ध है ॥ जन्म० ॥ सुगंधं ॥२॥ तंदुल

अमल चितार वासमती सुख दास के ॥जन्म०॥ अक्षतं ॥३॥ महकें फूल अपार अलिगुंजें ज्योंस्तुति करें ॥जन्म०॥ पुष्पं४॥ लाडू बहु विस्तार चिक्कण मिष्ट सुगंधता ॥जन्म० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥ दीप रत्नमय सारज्योति प्रकाशी जगति में ॥जन्म०॥ दीपं० ॥६॥ धूप सुवास विचार चंदन अगर कपूर की जन्म० ॥ धूपं ॥ ७ ॥ फलशोभा अधिकार लौंग छुहारे जायफल ॥ जन्म० ॥ फलं ॥ ८ आठो द्रव्य सम्हार उत्तम से उत्तम लिये । जन्म० ॥ अर्घं ९ ॥ सम्यक् दर्शन ज्ञान व्रत शिवमग तीनों मई । पार उतारन जान द्यानति पूजों व्रत सहित ॥ पूर्णार्घं १० ॥अथ सम्यकदर्शन पूजा प्रारंभ्यते ॥ दोहा ॥ सिद्धअष्ट गुण में प्रथम मुक्ति महल सोपान । याविन ज्ञान चरन विफल सम्यक दरश प्रधान । ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनेभ्योः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥ अथाष्टकं ॥ सोरठा ॥ नीर सुगंध अपार तृषाहरे मल क्षयकरे । सम्यग्दर्शनसार अष्टअंग पूजो सदा ॥ ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनेभ्योः ॥ जलं ॥ १ ॥ जलकेसर घनसार ताप हरे शीतल करे सम्यग्दर्शन० ॥ सुगंध ॥ २ ॥ अक्षत अनुप निहार दारिद्र नाशें गुणकरें । सम्यग्दर्शन० ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥ पुष्प सुवास उदार खेद हरें मनशुचिकरें । सम्यग्दर्शन० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥ नेवज विविधि प्रकार क्षुधा हरें स्थिरता करें । सम्यग्दर्शन० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥ दीपज्योति तमहार घटपट परकाशे महा । सम्यग्दर्शन० ॥ दीपं ॥ ६ ॥ धूप घ्राण सुखकार रोगविघ्न जड़ता हरे ॥ सम्यग्दर्शन० ॥ धूपं ॥७॥ श्री फल आदि विथार निश्चय सुर शिव पद करें ॥ सम्यग्दर्शन० ॥ फलं ॥ ८ ॥ जल गंधाक्षत चारु दीप धूप फल फूल चरु ॥ सम्यग्दर्शन० ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

जयमाल ॥ दोहा ॥ आप आप निश्चय विषें तत्त्वप्रती ति व्यवहार । रहित दोष पच्चीस है सहित अष्ट गुणसार ॥१॥ जकड़ीछन्द ॥ सम्यग्दर्शन रत्नगहीजे । जिन वच में संदेह न कीजे ॥ इसभव विभव चाह दुःखदानी । परभव भोग चहो मतप्राणी ॥ प्राणी गलानि नकर अशुभ लख धर्म गुरु प्रभु परखिये । परदोष ढकिये धर्म डिगते को सुथिर कर हर्षिये । चउ संग से वात्सल्य कीजे धर्म की सुप्रभावना । गुण आठसे गुण आठलहिये यहां फेर न आवना ॥ घत्ता ॥ अथ ज्ञानपूजा प्रारंभ्यते ॥ दोहा ॥ पंचभेद जाके प्रगट ज्ञेय प्रकाशन भानु । मोह तपन हर चन्द्रमा सोही सम्यग्ज्ञान ॥ ओं ह्रीं सम्यग्ज्ञानेभ्योः पुष्पांजलिंक्षिपेत् । अथाष्टकं ॥ सोरठा ॥ नीर सुगंध अपारतृषाहरे मलक्षयकरे । सम्यग्ज्ञान विचार आठ भेद पूजों सदा ॥ ओं ह्रीं सम्यग्ज्ञानेभ्योः ॥ जलं ॥ १ ॥ जल केसर घनसार तापहरे शीतल करे । सम्यग्ज्ञान० ॥ सुगंधं ॥ २ ॥ अक्षत अनुप निहार दारिद्र नाशें सुख करें । सम्यग्ज्ञान० ॥अक्षतं ॥३॥ पुष्प सुवास उदार खेदहरें मन शुचिकरें॥ सम्यग्ज्ञान० पुष्पं ॥४॥ नेवज विविधि प्रकार क्षुधाहरें स्थिरताकरें । सम्यग्ज्ञान० ॥ नैवेद्यं ॥५॥ दीपज्योति तमहार घट पटपरकाशै महा सम्यग्ज्ञान० दीपं० ॥ ६ ॥ धूप घ्राण सुखकार रोगविघ्न जड़ताहरे । सम्यग्ज्ञान० ॥ धूपं ॥ ७ ॥ श्रीफल आदि विथार निश्चय सुरशिव पदकरें। सम्यग्ज्ञान० ॥फलं॥ जल गंधाक्षत चारु दीपधूप फल पुष्प चरु ॥ सम्यग्ज्ञान० ॥८॥ जयमाल ॥ दोहा ॥ आप आप जाने नियत ग्रंथपठन व्यवहार । संशय विभ्रम मोह विन अष्ट अंग गुणकार ॥१॥ जकड़ीछंद॥

लियेवसुद्रव्यहैं ॥ हमें शक्तिसो नाहिं यहां करे स्थापना । पूजें जिनग्रह प्रतिमा है हित अपना ॥ ओं० ह्रीं श्रीनन्दीश्वर द्वीपे बावन जिनालयेभ्यो: अत्र वत्र वतर: संवौ ष टाह्वाननं ॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं अत्र मम सन्निहितो भव भव विषठ संधोस करणं ॥ अथाष्टकं ॥ छंद अछपड़ी होली के ताल में ॥ कंचन मणिमय भृंगार तीरथ नीरभरा । तिह धार दई निरवार जन्म न मरण जरा । नंदीश्वर श्रीजिन धाम बावन पूजकरौं । वसुदिन प्रतिमा अभिराम आनन्द भावधरो ॥ ओं ह्रीं श्रीनंदीश्वर द्वीपे बावन जिनालयेभ्यो: ॥ १ ॥ भव तप हर शीतल वास सो चंदन नाही । प्रभु यह गुण कीजे सांच आयो तुम पाहीं ॥ नंदीश्वर० ॥ सुगन्धं ॥ २ ॥ उज्वल अक्षत जिनराज पुंज धरे सो है । तुम जीते अक्ष समाज तुम सम अरु को हैं ॥ नंदीश्वर० ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥ तुम काम विनाशन देव ध्याऊं फूलन में । लहों शील लक्ष्मी एव छूटों शूलन से ॥ नंदीश्वर० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥ नेवज इंद्री बलकार सो तुमने चूरो । चरु तुम ढिग सो है सार अचरज है पूरो ॥ नन्दीश्वर० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥ दीपक की ज्योति प्रकाश तुम तन माहिल से । टूटे कर्मों की राश ध्यान कनीदरशे ॥ नंदीश्वर० ॥ दीपं ॥ ५ ॥ कृष्णागर धूप सुवास दश दिशि नारवरें ॥ अति हर्षभाव परकाश मानो नृत्य करे ॥ नंदीश्वर० ॥ धूपं ॥७॥ बहु बिधि फल लै तिहुंकाल आनन्द राचत हों । तुम शिव फल देहु दयालतो हों जांचत हो ॥ नंदीश्वर० ॥ फलं ॥ ८ ॥ यह अर्घ कियो निज हेतु तुमको अर्पतुहों ॥ द्यानति कीनो शिव खेत वीर्य्य समर्पतु हीं ॥नंदीश्वर०॥अर्घं ॥९॥ जयमाल॥

॥ दोहा ॥ कार्तिक फाल्गुणाषाढ़के अन्त्य आठ दिनमाहिं नन्दीश्वर सुर जात है हम पूजें यह ठाहिं ॥ १ ॥ कामिनी मोहन छंद ॥ एकसो त्रेसठि कोड़ि योजन महा। लाखचौरासिया एक दिशि में कहा ॥ आठसो द्वीप नन्दीश्वरं भासुरं। भवन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं ॥ २ ॥ चारि दिशि चारिअंजन गिरिः राजये। सहस्र चौरासिया एक इक छाजये ॥ ढोल समगोल ऊपर तले सुन्दरं। भवन० ॥३॥ एक इक चारि दिशि चारि शुभ बावरी। एक इक लाख योजन अमल जल भरी॥ चहूं दिशिचार वन लाख योजन वरं। भवन० ॥४॥ सोलहे वापीन में सोलहे गिरि दधिमुखं। सहस्र दश महा योजन लखत ही सुखं ॥ बावरी कोण दोमाहि दो रतिकरं। भवन० ॥ ५ ॥ सोलहे बत्तीस इक सहस्र योजन कहे। चारि दिशिले मिलें सर्व बावन लहे ॥ एक इक शीर्श पर एक जिन मन्दिरं। भवन० ॥ ६ ॥ बिंबवसु एकसौ रत्नमय सोहये। देव देवी सवे नयन मन मोहये ॥ पांचसौं धनुष तन पद्म आसन परं ॥ भवन० ॥ ७ ॥ लाल सुख नयन शुभ श्याम अरु सेत है। श्याम रंग भौंह शिर केश छवि देत हैं ॥ बचन बोलन मनो हंसत कालुष हरं ॥ भवन० ॥ ८ ॥ कोटि शशिभानु द्युति तेज छिपि जात हैं। महा वैराग्य परणाम ठहरात हैं ॥ वयन नहिं कहत लख होत सम्यक धरं। भवन० ॥ ९ ॥ घत्ता ॥ सोरठा ॥ नन्दीश्वर जिन धाम प्रतिमा महिमा को कहै। द्यानति लीनो नाम यही भक्ति शिव सुख करै ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इतिश्री नंदीश्वर पूजा सम्पूर्ण ॥

निर्वाणक्षेत्रपूजा ॥

* सोरठा *

परम पूज्य चौवीस जिहि जिहि थानक शिवभये । सिद्धि भूमि निशिदीस मन बचतन पूजा करो ॥ ओं ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो: । अत्रवत्र वतर: संवौषटाह्वाननं अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र ममसन्निहितो भव भव विषट संधीस करणं । अथाष्टकं ॥ गीता छन्द ॥ शुचि क्षीरोदधि समनीर निर्मल कनक झारो में भरों । संसार पार उतार स्वामी जोड़कर विनती करों ॥ सम्भेद गिरि गिरि नारि चंपा पावापुर कैलाश का । पूजों सदा चौवीस जिन निर्वाण भूमि निवास को ॥ ओं ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षे त्रेभ्यो: । जलं ॥ १ ॥ केसर कपूर सुगन्ध चन्दन सलिल शीतल विस्तरों। भवताप का संताप मेटो जोड़ कर विनती करों। सम्मेद० ॥ सुगंधं ॥२॥ मोती समान अखंड तंदुल अमल आनन्द उरधरों । औगुण हरो गुण करो हम को जोड़ कर विनती करों । संमेद०॥ अक्षतं ॥ ३ ॥ शुभफूल राशि सुवास बासित खेत सब मन के हरो। दु:खधाम काम विनाश मेरो जोड़कर बिनतो करों ॥ संमेद० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥ नेवज अनेकप्रकार योग्य मनोग्य धर भव भय हरों । यह भूख दूषण टार मेरो जोड़ कर विनतो करों ॥ सममेद० ॥ नैवेद्य ॥ ५ ॥ दीपकप्रकाश

उजाल उज्ज्वल तिमर सेती नहिंडरों । संशय विमोह निवार विभ्रम जोड़ कर विनती करों ॥ सम्मेद० ॥ दीपं ॥६॥ शुभ धूप परम अनूप पावन भाव या विधि उच्चरों । वसु कर्म पुंज जलायदीजे जोड़ कर विनती करों ॥ सम्मेद० ॥ धूपं ॥ ७ ॥ बहु फल मगाय चढ़ाय उत्तम चारिगति से निरवरों । निश्चय मुक्ति फल देहु हम को जोड़ कर विनती करों ॥ सम्मेद० ॥ फलं० ॥८॥ जल गंध अक्षत पुष्प चरुदीप धूप फल अर्घ करों । द्यानति करो निर्भय जगति में जोड़ कर विनती करों ॥ संमेद० ॥ अर्घं ॥ ९ ॥ जयमाल ॥ सोरठा॥ श्री चौबीस जिनेश गिरिकैलाशादिक नमों । तीर्थ महा प्रवेश महापुरुष निर्वाण से ॥ १ ॥ बेसरी छन्द ॥ नमो ऋषभ कैलाश पहारं । नेमिनाथ गिरिनारि निहारं ॥ वासपूज्य चंपापुर वन्दों । सन्मति पावापुर अभिनन्दों ॥ २ ॥ बन्दों अंजित अजित पद दाता । वन्दों संभव भव दुखघाता ॥ वन्दों अभिनन्दन गुणनायक । वन्दों सुमति सुमति के दायक ॥ ३ ॥ बन्दों पद्म मुक्तिपद्माधर । बन्दों सुपार्श्व पांस आशाहर ॥ बन्दों चन्द्रप्रभु प्रभाचन्दा । वंदों सुविधि सुविधि निधि कन्दा ॥ ४ ॥ बन्दों शीतल अघतप शीतल । बन्दों श्रेयांश श्रेयांश महीतल ॥ बन्दों विमल विमल उपयोगी । वन्दों अनंत अनंत सुखभोगी ॥५॥ वन्दों धर्म धर्म विस्तारा । वन्दों शांति शांति मनधारा ॥ बन्दों कुंथु कुंथु रक्ष पालं । वन्दों अरह अरह गुणमालं ॥ ६ ॥ वंदों मल्ल काम मल चूरण । बन्दों मुनि सुव्रत व्रत पूरण ॥ बंदों नमि जिन नवत सुरासुर । बंदों पार्श्व पार्श्व भ्रमजगहर ॥ ७ ॥ वीसो सिद्ध भूमि जाऊर । शिखर संमेद महा

गिर भूपर ॥ एक बार बन्दे जो कोई । ताहि नर्क पशुगति ना होई ॥ ८ ॥ नरगति नृप सुरशक्रकहावे । तिहु जगभोग भोगि शिवजावे ॥ विघ्न विनाशन मंगलकारी । गुण त्रिशाल बन्दो नर नारी ॥ ९ ॥ घत्ता ॥ जो तीर्थ जावे पाप मिटावे ध्यावे गावे भक्तिकरे । जाको यश कहिए सम्पति लहिए गिरि के गुण को बुध उचरे ॥ इत्याशीर्वादः ॥

॥ इति श्रीनिर्वाण क्षेत्र पूजा संपूर्णम् ॥

अकृत्रिमचैत्यालय पूजा ।

॥ दोहा ॥
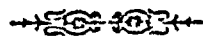
इस विधि ठाड़ो होय के प्रथम पढ़े जो पाठ ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम नाशे कर्म सु आठ ॥ १ ॥
अनन्त चतुष्टय के धनी तुम ही हो शिरताज ।
मुक्ति बधू के कन्त तुम तीन जगत के राज ॥ २ ॥
तिहुं जग की पीड़ा हरण भवोदधि शोषण भानु ।
ज्ञायक हो तुम जगत् के दायक पद निर्वाण ॥ ३ ॥
हर्त्ता अघ अंधियार के कर्त्ता धर्म प्रकाश ।
थिरता पद दातारहो धरता निज गुण खास ॥ ४ ॥
धर्मामृत जलधर लखो ज्ञान भानु गुण रूप ।
तुम्हरे चरण सरोज को नवत तिहूं जग भूप ॥ ५ ॥
भवि जनको भव कूप से तुम ही काढन हार ।
दीनदयालु अनाथ पति आतम गुण भण्डार ॥ ६ ॥
चिदानन्द निर्मल कियो तुमने हनि विधि मैल ।

सरलकरो या जगत में भविजन को शिव गैल॥ ७ ॥
तुम पद पंकज पूजते विघ्न रोग मिट जाय।
शत्रु मित्रता को धरे विष निर्विषता थाय॥ ८ ॥
चक्री खग धरनेंद्र पद मिले आप से आप।
अनुक्रम से शिवपुर लहै नेम सकल हनपाप॥ ९ ॥

इति स्तवनं * अथस्थापनं * चौपाई॥ आठकोटि अरु छप्पन लाख। सहस्र सत्तानवे चौशत भाष॥ जोड़ इक्यासी जिनवर धाम। तीनलोक आह्वान कराम॥ ओं ह्रीं आठ करोड़ छप्पनलाख सत्तानवे हजार चारसौ इक्यासी अकृत्रिम जिनभवनेभ्यो: अत्रवत्रवतर: संवौषट आह्वाननं॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं॥ अत्र ममसन्निहितो भव भव वषटसन्निद्धि आपनं॥ अथाष्टकं॥ त्रिभङ्गछन्द॥ क्षीरोदधिनीरं उज्ज्वल क्षीरं छानि सुचीरं भरझारी। अति मधुर लखावन परम सुपावन तृषा बुझावन गुण भारी॥ वसुकोड़ि सुछप्पन लाख सत्तानवे सहस्र चार शत इक्यासी जिन ग्रेह अकृत्रिम तिहुं जग भीतर पूजत पद ले अविनाशी॥ ओंह्रीं तीनलोक संबंधी आठ करोड़ छप्पन लाख सत्तानवे हजार चार सौ इक्यासी जिन भवनेभ्यो: ॥ जलं॥१॥ मलयागिरी पावन केसर दावन ताप बुझावन घिसलीनों। धर कनक कटोरी दो कर जोरी तुम पद ओरी चित दीनों॥ वसु कोड़ि सुछप्पन लाख सत्तानवे सहस्र चार शत इक्यासी। जिन ग्रेह अकृत्रिम तिहुं जग भीतर पूजत पद लहै अविनाशी॥ सगंधं॥ २॥ बहु भांति अनोखे तंदुल चोखे लख निर्दोषे हम लीने। धर कंचन थाली तुम गुण माली पूज विशाली कर दीने॥ वसु कोड़ि सुजप्पन लाख सत्तानवे

सहस्र चार शत इक्यासी। जिन ग्रेह अकृत्रिम तिहूं जग भीतर पूजत पद लहे अविनाशी ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥ शुभ पुष्प सुजाती हैं बहु भांती अलिलपटाती लेयवरं। धरकनक रकेब कर गह लेवी प्रभु पद पूजन भेंट धरं। वसुकोड़ि सुछप्पन लाख सत्तानवे सहस्र चार शत इक्यासी। जिन गेह अकृत्रिम तिहूं जग भीतर पूजत पद लहै अविनाशी॥ पुष्पं ॥ ४ ॥ खुरमाजु गिंदौड़ा बरफी पेड़ा घेवर मोदक भरथारी। विधि पूर्वक कीने घृत पय भीने खांड़ मिलीने सुखकारी। वसु कोड़ि सु छप्पन लाख सत्तानवे सहस्र चार शत इक्यासी। जिन ग्रेह अकृत्रिम तिहूं जग भीतर पूजत पद लहे अविनाशी ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥ मिथ्यात्व महातम छाय रहो हम निज पर परणत नहीं सूजे। यह कारण पाके दीप सजाके थार भरा के हम पूजे। वसु कोड़ि सुछप्पन लाख सत्तानवे सहस्र चार शत इक्यासी ॥ जिन ग्रेह अकृत्रिम तिहुं जग भीतर पूजत पद लहैं अविनाशी ॥ दीपं ॥ ६ ॥ दशगंध कुटाके धूप बनाके निजकर लाके धर ज्वाला। तसुधूम्र घलाई दशदिशिछाई बहु महकाई अति आला॥ वसु कोड़ि सुछप्पन लाख सत्तानवे सहस्र चार शत इक्यासी। जिनग्रेह अकृत्रिम तिहुं जग भीतर पूजत पद लहे अविनाशी ॥ धूपं ॥ ७ ॥ बादाम छुहारे श्रीफलधारे पिस्ताप्यारे दाखवरं। इन आदि अनोखे लखके चोखे थाल संयोके भेटधरं ॥ वसु कोड़िसुछप्पन लाख सत्तानवे सहस्र चार शत इक्यासी। जिनग्रेह अकृत्रिम तिहुं जगभीतर पूजत पद लहे अविनाशी। फलं॥८॥जल चन्दन तंदुल कुसुम सुनेवज दीप धूप फल अर्घ रचो जयघोष कराऊं बीन बजाऊं अर्घ चढ़ाऊं रहस सचो-

वसुकोड़ि सुछपृपन लाख सत्तानवे सहस्र चार शत इक्यासी। जिनग्रेह अकृत्रिम तिहुं जग भीतर पूजत पद लहे अविनाशी ॥ अर्घं ॥ ९ ॥ अथ प्रत्येक अर्घ । चौपाई ॥ अधोलोक जिन आगम शाख। सात करोड़ बहत्तर लाख ॥ श्रीजिन भवन महा छवि देत। ते सब पूजो विधिक्षय हेत ॥ ओं ह्रीं अधो लोक संबंधी सात करोड़ बहत्तर लाख अकृत्रिम जिन भवनेभ्यो: अर्घं ॥ १ ॥ मध्य लोक जिन मन्दिर ठाठ। साढे चार शतक अरु आठ ॥ ते सब पूजों अर्घ चढ़ाय। मन वच तन त्रय योग मिलाय ॥ ओं ह्रीं मध्य लोक संबंधी अकृत्रिम चारसौ अट्ठावन जिन भवनेभ्यो: अर्घं ॥ २ ॥ अड़िल्ल छंद ॥ ऊर्ध्व लोक के मांहिं भवन जिन जानिये। लाख चौरासी सहस्र सत्तानवे मानिये तापर धरते बीसजजों शिर नायके। कंचन थाल मझार जलादिक ल्यायके॥ ओं ह्रीं ऊर्ध्व लोक संबंधी चौरासी लाखसत्तानवे हजार तेवीस अकृत्रिम जिनभवनेभ्यो: अर्घं ॥३॥ गीताछन्द॥ वसुकोड़ि सुछप्पन लाख ऊपर सहस्र सत्तानवे मानिए। शतचारपैगणले इक्यासी भवन जिनवर जानिए ॥ तिहुं लोक भीतर सास्वते सुर असुर नित पूजा करें। तिन भवन को हम अर्घ देके पूज चहुंगति दुःख हरें ॥ ओं ह्रीं तीन लोक सम्बन्धी आठ करोड़ छप्पन लाख सत्तानवे हजार चारसौ इक्यासी अकृत्रिमजिनभवनेभ्यो: ॥ पूर्णार्घं ॥४॥ अथ जयमाल ॥ दोहा॥ अब बरनो जय मालक: सुनो भव्य चितल्याय। जिन मंदिर तिहुं लोक के लेउ सकल दरशाय॥ १ ॥ पद्धड़ी छन्द ॥ जय अमल अनादि अनन्त जान। अनमिति सो अकृत्रिम अचलमान ॥ जै अजर अखंड अनूपधार। तहां पंच द्रव्य नाहीं लगार २ जयनिराकार

अविकार होइ। राजत सुअनन्त प्रदेश सोइ ॥ जय शुद्ध सुगुण अवगाह पाय। दशहू दिशि ऐसी विधि लखाय॥३॥ यह रूप अलोकाकाश जान। ता मध्य लोक यह विद्यमान॥ स्वयमेव बनो आविचल अनन्त। अविनाशी अनादि सुकहत सन्त ॥४॥ पुरुषाकार जुठाड़ो निहार। कटि हाथ धरे पद द्वै पसार॥ जय दक्षिण उत्तर सत्र निहार। राजूजो सात भाषो विचार ॥५॥ जयपूर्व अपर दिशिघाटि वाधि। पुन कथन कहों ताको जुसाधि॥ लख सुभूतले राजू जो सात। मध्य लोक एक राजू विख्यात ॥६॥ फिर ब्रह्म स्वर्ग राजू जुपांच। फिर सिद्ध एक राजू जुसांच ॥ दश चार ऊंच राजू गणाय। षट द्रव्य लिये चतुकोण थाय ॥७॥ तसुवात बलयलपटाय तीन। ते निराधार लखियो प्रवीन॥ त्रसनाड़ीतासम जान खास। चतुकौन एक राजू जो व्यास ॥८॥ राजू उतंग चौदह प्रमाण। लखिये सो यह रचना सुजान॥ तामध्य जीव त्रससर्व आय। निज थान पाय तिष्ठे सुथाय ॥९॥ लख अधःभाग तसु सुभ्रुथान। गणि सात कहे आगम प्रमाण॥ षटथान माहिंनारक वसेय॥ इक सुभ्रूभागफिर तीन ठेय ॥१०॥ तसु अधः भाग नारक रहाय। फिर ऊर्ध्व भाग दो थान पाय॥ वस रहे भुवन व्यन्तर जुदेव। पुनिहर्षि छजे रचना स्वयमेव ॥११॥ तिन थान ग्रेह जिन राज भाष। गणि सात कोड़ि बहत्तर सुलाख॥ तेभवन नमों मन वचन काय। गति सुभ्र हरण हारे लखाय ॥१२॥ पुनः मध्य लोक गोला जुकार। लख द्वीपोदधि रचना विचार॥ गणि असंख्यात भाषे जुसन्त। लख स्वयंभू रमण सत्र के सुअन्त ॥१३॥ इक राजू व्यास में सर्व जान। मध्य लोक तनो यह

कथन मान ॥ सब मध्य द्वीप जम्बू गणाय । त्रय दशम रुचिक वरनाम ल्याय ॥१४॥ इन तेरह में जिन धाम जान। शत चार अट्ठावन हैं प्रमाण । खगदेव असुर नर आय आय। पद पूजत हैं शिर नाय नाय ॥१५॥ जय ऊर्ध्व लोक सुर कल्प वास । तिस थान छजें जिन भवनखास ॥ जहां लाख चौरासी पै लखाय । सहस्र सत्तानवे अरु गणाय ॥ १६ ॥ तामे ते इस फिर जोड़देय । जिन भवन अकृत्रिम मानलेय ॥ प्रतिमा रत्नों की तहां बताय । जिन बिम्ब एक शत आठ थाय॥१७॥ शत पांच धनुष उन्नत लखाय । पद्मासन ध्यानारूढ़ थाय शिरछत्र तीन शोभित विशाल । त्रय पाद पीठ मणि जड़ित लाल ॥ १८ ॥ भामंडल की छवि कौन गाय । फिर चंवर ढुरें चौसठ लखाय ॥ जय दुंदुभि ध्वनि अद्भुत सुनाय । जय पुष्प वृष्टि गंधोदकाय ॥ १९ ॥ मंगल विभूति राजति अनेक । जय तरु अशोक शोभा सु टेक ॥ घट धूप छजे मणि माल पाय । घट धूप धूम्र मय सर्व छाय ॥२०॥ जय केतु पंक्तिसोहैं अपार । गंधर्व देव गावें जुसार ॥ सुर जन्म लेत बल अवधि पाय । तिस थान प्रथम पूजा कराय ॥२१॥ जिन ग्रेहतनो वर्णन अपार । हम तुच्छ बुद्धि किम लहैं पार ॥ जयदेव जिनेश्वर जगत भूप । नमि नेम नमे निजदेह रूप ॥२२॥ घत्ता ॥ दोहा ॥ तीनलोक में सास्वते श्रीजिन भवन विचार । मन बच तन कर शुद्धता पूजों अर्घ उतार ॥२३॥ ओं ह्रीं तीनलोक सम्बन्धी अकृत्रिम चैत्यालयेभ्यो: ॥ अर्घं ॥ कुसुमलताछंद॥ तिहुं जगभीतर श्रीजिनमंदिर बने अकृत्रिम अति सुखदाय । नर सुर खगकर बन्दनीकहैं तिन को भविजन पाठ कराय ॥ धन धान्यादिक सम्पति जिनके पुत्र पौत्र बहु होत भलाय।

चक्री सुर धरनेंद्र इन्द्रहो कर्म नाशि शिवपुर को जाय ॥
इत्याशीर्वादः ॥

॥ इति श्रीअकृत्रिम जिनचैत्यालय पूजा संपूर्ण ॥

अथ सरस्वति पूजा
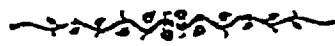
॥ दोहा ॥

जन्मजरा मृत्यु क्षय करो हरो चतुर्गति भीति । सहस्त्र सत्तानवे जानिये भवसागर से लेतरो पूजों जिन वच प्रीति ॥ ओं ह्रीं श्री जिन मुखोत्पन्न सरस्वतिः वाग्वाणी द्वादशांगेभ्योः ॥ अत्र वत्र वतरः संवौषटाह्वाननं । अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भत्र विषट संधीस करणं ॥ अथाष्टकं । त्रिभंगीछंद ॥ क्षीरोदधि गंगा विमल तरंगा सलिल सुचंगा सुख संगा भर कंचन झारी धार निकारी तृषा निवारी चित चंगा ॥ तीर्थंकर की ध्वनि गणधरने सुनि अंग रचे चुनि ज्ञान मई । सो जिनवर वाणी शिव सुखदानी त्रिभुवन माना पूज्य भई ॥ ओंह्रीं श्रीजिन मुखोत्पन्न सरस्वतिः वाग्वाणी द्वादशांगेभ्योः जलं ॥ १ ॥ कर्पूर मंगाया चन्दन आया केसर लाया रंगभरी । शारद पद बन्दों पाप निकंदों मन आनन्दों दाह हरी ॥ तीर्थंकर० ॥सुगंधं २ ॥ तंदुल सुकमोदं धरिहिय मोदं अति अनुमोदं चन्द्रसमं । वहु भक्ति बढ़ाई कीरत्ति गाई होउ सहाई मात ममं ॥ तीर्थंकर० अक्षतं ३ ॥ वहु फूल सुवासं विमल प्रकाशं आनन्द राशिं लायधरं ॥ मैं काम मिटाऊं सुख उपजाऊं शील बढ़ाऊं दोषहरं ॥ तीर्थंकर० पुष्पं ॥४॥

पक्वान बनाऊं बहु घृत लाऊं सब विधिभाऊं मिष्ट महा। पूजा स्तुति गाऊं प्रीति बढ़ाऊं क्षुधा नशाऊं । हर्ष-लहा ॥ तीर्थंकरः ॥ नैवेद्यं ५ कर दीपक ज्योतं तम क्षयहोतं ज्याति उद्योतं तुम्हें चढ़े। तुमहो परकाशक भर्म विनाशक हम घट भासक ज्ञान बढ़े ॥ तीर्थंकर० दीपं ६ ॥ शुभ गंध दशो कर पावक मे धरधूप मनोहर खेवतहों । सब पाप जलाऊं पुण्य कमाऊं दास कहाऊं सेवतहों ॥ तीर्थंकर० धूपं ॥ ७ ॥ वादाम छुहारी लोंग सुपारी श्रीफल भारी ल्यावत हों । मनोवांछित दाता मेंटो असाता तुमगुणमाता ध्यावत हों ॥ तीर्थंकर० फलं ॥ ८ ॥ नयनों सुखकारो मृदुगुण भारी उज्ज्वलसारी मोलधरै ।शुभ गंध सम्हारों वशन निहारों तुम तन धारों ज्ञान करै ॥ तीर्थंकर० वस्त्रं ९॥ जल चन्दन अक्षत फूल चरूचित दीप धूप फल अति लावे ।पूजा को ठानत जो तुम जानत सो नर द्यानति सुख पावे ॥ तीर्थंकर० अर्घं १० ॥ जयमाल सोरठा ॥ ओंकार ध्वनिसार द्वादशांग वाणी विमल । नमोभक्ति उरधार, ज्ञान करे जड़ताहरे ॥१॥ वेसरी छंद ॥ पहिलो आचरांग वखानो । पद अष्टादश सहस्त्र प्रमाणो ॥ दूजो सूत्र कृतांग भिलाषं । पद छत्तीस सहस्त्र गुरु भाषं॥२॥ तीजो स्थानांग सो जानो सहस्त्र वयालिस पदश्रद्धाणो॥ चौथो समवायांग निहारं ।चौंसठ सहस्त्र लाखइकधारं॥३॥ पंचम व्याख्या प्रज्ञप्ति दरशं। दोय लाख अट्ठाइस सहस्त्रं॥ षष्ठम ज्ञात्रकथा विस्तारं । पांच लाख छप्पन हजारं ॥ ४ ॥ सप्तम उपवासक ध्ययनांगं । सत्तर सहस्त्र ग्यारे लख भंगं । अष्टम अंत कृतांग सईसं ॥ अट्ठाइस सहस्त्र लाख तेईसं ॥ ५ ॥ नवम अनुत्तर अंग विशालं।

लाख बानवे सहस्त्र चवालं ॥ दश प्रश्न व्याकरण विचारं। लाख त्रानवे सोले हजारं ॥ ६ ॥ ग्यारं सूत्रविपाक सो भाषं। एक कोड़ि चौरासी लाखं ॥ चारि कोड़ अरु पंद्रह लाखं। दोहजार सब पद गुरु शाषं ॥ ७ ॥ वारम दृष्टि व-दायन अंगं। एकसौ आठ कोड़ि पद भंगं। अरसठ लाख स-हस्त्र छप्पन हैं। सहित पंच पद मिथ्या हन हैं ॥ ८ ॥ एक सौ बारह कोड़ि बखानो। लाख तिरासी ऊपर जानो ॥ अट्ठावन सहस्त्र पंच अधिकारे। द्वादशांग के सब पद धारे ॥ ९ ॥ इक्यावन कोड़ आठ सुन लाखं। सहस्त्र चौरासी छः सौ भाषं ॥ साढ़ै इक्कीस श्लोक बताये। एक२ पद के येगाये ॥ १० ॥ घत्ता ॥ यावणी के ज्ञान से सूझै लोका लोक। द्या-नति जग जयवंत को सदा देत हैं धोक ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इतिश्री सरस्वतिः पूजा सम्पूर्ण ॥

अथ गुरुपूजा प्रारंभ्यते

—•—•—

* दोहा *

चहुंगति दुःख सागरविषें तारण तरण जहाज। रत्नत्रय निधि नग्न तन धन्य महामुनिराज॥ ओं ह्रीं श्री वीतराग दिगम्बर गुरुभ्योः अत्रवत्र वतरः संवौषटाह्वाननं । अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव विषट संधीस करणं ॥ अथाष्टकं ॥ गीताछन्द ॥ शुचिनीर निर्मल क्षीरोदधि सम सुगुरु चरण चढ़ाइये। तिहुं धार तिहुं जगतारि स्वामी अति उछाह बढ़ाइये। भवभोग तनवैराग धारि निहारि शिव तप तपत हैं। तिहुं जगति नाथ आ-

राशि साधु सुपूज्य नित गुणजपत हैं॥ ओं ह्रीं श्रीवीतराग दिगम्बर गुरुभ्यो: ॥ जलं ॥१॥ कर्पूर चन्दन सलिल से घिस सुगुरु पद पूजा करों। सब पाप ताप मिटाव स्वामी धर्म शीतल विस्तरों॥ भवभोग० सुगंधं २॥ झिनमा कमोद सुवास उज्ज्वल सुगुरुपदतल धरत हों। गुण करो औगुण हरो स्वामी वंदना मैं करत हों॥ भवभोग० अक्षतं ३॥ शुभफूल राशि प्रकाश परमल सुगुरु पांयन परतुहों। निवार मार उपाधि स्वामी शील उरदृढ़ धरतुहों॥ भवभोग० पुष्पं ४॥ पक्वान मिष्ट सलोन सुन्दर सुगुरु पांयनि प्रीतिसे। कर क्षुधारोग विनाश स्वामी सुथिर कीजे रीतिसे॥ भवभोग० नैवेद्यं ॥ ५ ॥ दीपक सज्योति उद्योत जगमग सुगुरु पद पूजों सदा। तम नाशज्ञान प्रकाश स्वामी मोहिंमोह न हो कदा॥ भवभोग० दीप ६ ॥ बहु अगर आदि सुगंध खे वहुं सुगुरु पद पद्माकरो। दुःख पुंज काट जलाव स्वामी गुण अक्षय चित्त में धरों॥ भवभो० धूपं ॥७॥ भर नारियल बादाम बहुविधि सुगुरु पद आगेधरों। मंगल महाफल करो स्वामी जोड़कर विनती करों॥ भवभोग० ॥ फलं ८॥ जलगंध अक्षत पुष्प नेवज दीप धूप फलावली। द्यानति सुगुरु पद सेवकरजो लहों सुख संपति भली॥ भवभोग० अर्घं ॥९॥ जयमाल॥ कनक कामिनी के विषे यरादीखे संसार। त्यागी वैरागी महासाधु सुगुण भंडार ॥१॥ तीनघाट नव कोड़िसब वन्दों शीर्षनवाय। गणती अट्ठाईसलों कहों आरती गाय ॥२॥ बेसरीछंद ॥ एक दया पालें मुनिराजा। रागदोष दो हरन समाजा। तीनों लोक प्रगट सब देखें। चार आराधना में सुख पेखें॥ ३ ॥ पंच महाव्रत दुर्द्धर धारें।

छहीं द्रव्यजानें हितसारें । सप्तभंग बानी मन लावें । आठो ऋद्धिउचित सो पावें ॥४॥ नवो पदार्थ विधि से भाषें। बन्ध दशों चूर्ण कर नाखें ॥ ग्यारह संकर जाने माने । उत्तम बारहतप जो ठाने ॥ ५ ॥ तेरह भेद काठिया चूरे। चौदह गुण स्थान चढ़ें सूरे ॥ पंद्रह महा प्रमाद विनाशें । ओकषाय षोड़सको नाशें ॥ ६ ॥ बंधादिक सत्रह सूत्रहिसुन। स्वास अठारह जन्म मरण पुन ॥ उन इस जीव समाज बखाने । बीस पिरूवना को पहिचाने ॥७॥ इकइस गुण श्रावक के गावें । बाइस अभक्ष त्याग करावें ॥ तेवीसो अहमेंद्र विमाने । चौविस इन्द्र स्वर्ग के जाने ॥८॥ पच्चीसो भावना नितभावें। छब्बिस अंग उपांग पढ़ावें ॥ सत्ताईस विषयको त्यागें । अट्ठाईस मूल गुण पागें ॥ ९ ॥ शीतकाल सरतीर निवासी । ग्रीष्म गिरि तपतेतप खासी ॥ वर्षा वृक्षतले थिरठाढ़े । आठो कर्म समूल उपाड़े ॥ १०॥ घत्ता दोहा ॥ कहों कहांलों भेद मैं बुधि थोड़ी गुण भूर । हेमराज सेवक हृदय, भक्ति भरो भरपूर ॥ ११ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

॥ इति श्री गुरुपूजा संपूर्णम् ॥
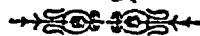
मक्सीपार्श्वनाथ पूजा ।

॥ दोहा ॥

श्रीपारस परमेश जी शिखर शीर्ष शिवधार। यहां पूजता

भाव से थापन कर त्रयवार ॥ ओं ह्रीं श्रीमक्सी पार्श्व जिनेभ्यो: अत्रवत्र वतर: सम्बौषटा ह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र मम सन्नहितो भव भव विषट सन्धोस करणं ॥ अथाष्टकं अष्टपदी छन्द ॥ लै निर्मल नीर सुछान प्राशक नाहि करों । मन बच तन कर वर आन तुम ढिग धार धरो ॥ श्री मक्सी पारसनाथ मन वच ध्यावत हों । मम जन्म जरा मृत्यु नाश तुम गुण गावत हों ॥ ओं ह्रीं श्री मक्सीपार्श्व नाथ जिनेन्द्रेभ्यो: ॥ जलं ॥ १ ॥ घिस चन्दनसार सुवासकेसर ताहि मिलै । मैं पूजों चरण हुलास मन में आनन्द लै ॥ श्री मक्सी पारस नाथ मन वच ध्यावत हों । मम मोहाताप विनाश तुम गुण गावत हों ॥ सुगंधं ॥ २ ॥ तन्दुल उज्ज्वल अति आन तुम ढिग पूज्य धरो । मुक्ताफल के उन्मान ले कर पूजकरो ॥ श्रीमक्सी पारसनाथ मन बच ध्यावत हों । संसार त्रास निर्वार तुम गुण गावत हों ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥ ले सुमन विविध के एव पूजों तुम चरणा । हो काम विनाशक देव काम व्यथा हरणा ॥ श्रीमक्सी पारसनाथ मन वच ध्यावत हो । मन वच तन शुद्ध लगाय तुम गुण गावत हों ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥ सजथाल सुनेवज धार उज्वल तुरत किया । लाडू मेवा अधिकार देखत हर्ष हिया ॥ श्रीमक्सी पारस नाथ मन बच पूजकरो । ममक्षुधा रोग निर्वार चरणोंचित धरों ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥ अति उज्वल ज्योति जगाय पूजत तुम चरणा । मम मोहांधेर नशाय आयो तुम शरणा ॥ श्रीमक्सी पारसनाथ मन बच ध्यावत हो । तुम हो त्रिभुवन के नाथ तुम गुण गावत हों ॥ दीपं ॥ ६ ॥ वर धूप द-

शांग बनाय सार सुगंध सही । अति हर्ष भाव उरलयाय अग्नि मझार दही ॥ श्रीमवसी पारसनाथ मन बच ध्यावत हों । वसु कर्महि कीजे क्षार तुम गुण गावत हो ॥ धूपं ॥ ७ ॥ बादाम छुहारे दाख पिस्ता धोय धरों । ले आम अनार सुपक्क शुचिकर पूजकरों। श्रीमवसी पारसनाथ मन बच ध्यावत हों । शिव फल दीजे भगवान तुम गुण गावत हों ॥फलं॥८॥जल आदिक द्रव्य मिलाय वसुविधि अर्घ किया । धर साज रकेवी ल्याय नाचत हर्ष हिया ॥ श्रीवसी पारसनाथ मन बच ध्यावत हों। तुम भव्यों को शिव साथ तुम गुण गावत हों ॥ अर्घं ॥ ९ ॥ अड़िल्ल ॥ जलगंधोक्षत पुष्प सो नेवज ल्याय के । दीप धूप फललेकर अर्घ बनाय के ॥ नाचों गाय बजाय हर्ष उरधारकर । पूरण अर्घं चढ़ाय सुजय जयकार कर ॥ पूर्णार्घं ॥ १० ॥ जयमाल ॥ दोहा ॥ जयजयजय जिनराज जी श्रीपारसपरमेश । गुण अनंत तुम मांहि प्रभु पर कछु गाऊं लेश ॥ १ ॥ पद्धड़ीछंद॥ श्रीवानारस नगरी महान । सुर पुर समान जानो सुथान तहां विश्वसेन नामा सुभूप । वामादेवी रानी अनूप ॥२॥ आये तसु गर्भ विषें सुदेव । वैशाखवदी दोइज स्वयमेव । माता को सेवें सची आन । आज्ञा तिनकीधरशीशमान॥३॥ पुनः जन्मभयो आनंदकार । एकादशि पौष वदी विचार॥ तब इन्द्र आय आनंद धार । जन्माभिषेक कीनो सुसार॥४॥ शतवर्ष तनी तुम आयु जान। कुंवरावय तीस बरस प्रमाण नव हाथ तुंग राजत शरीर । तन हरित वरण सोहैं सुधीर ॥५॥तुम उरग चिन्हवरउरगसोइ। तुमराज ऋद्धि भुगती न कोइ ॥ तपधारा फिर आनन्द पाय । एकादशि पौष बदी सहाय

॥ ६ ॥ फिर कर्म घातिया चार नाश । वर केवल ज्ञान भयो प्रकाश ॥ वदि चैत्र चौथि वेला प्रभात । हरि समोशरण रचियो विख्यात ॥ ७ ॥ नाना रचना देखन सुयोग । दर्शन को आवत भव्य लोग ॥ सावन सुदि सप्तमि दिन सुधारि । तब विधि अघातिया नाश चारि ॥ ८ ॥ शिव थान लयो वसुकर्म नाशि । पद सिद्ध भयो आनन्द राशि ॥ तुम्हरी प्रतिमा मक्सी मझार । थापी भविजन आनन्द कार ॥ ९ ॥ तहां जुरत वहुत भविजीव आय । कर भक्तिभाव से शीश नाय ॥ अतिशय अनेक तहां होत जान । यह अतिशय क्षेत्र भयो महान ॥ १० ॥ तहां आय भव्य पूजा रचात । कोई स्तुति पढ़ते भांति भांति ॥ कोई गावत गान कला विशाल । स्वरताल सहित सुन्दर रसाल ॥ ११ ॥ कोई नाचत मन आनन्द पाय । तत थेई थेई थेई ध्वनि कराय ॥ छम छमनूपुर बाजत अनूप । अति नटत नाट सुन्दर सरूप ॥ १२ ॥ द्रुम द्रम द्रमता बाजत मृदंग । सननन सारंगी बजति संग ॥ झननन नन झल्लारि बजे सोइ । घनन नन घननन ध्वनि घण्ट होइ ॥ १३ ॥ इस विधि भवि जीव करें अनंद । लहे पुण्य बन्ध करें पापमंद ॥ हम भी बन्दन कीनी अवार । सुदि पौष पंचमी शुक्रवार ॥१४॥ मन देखत क्षेत्र बढ़ो प्रयोग । जुरमिल पूजन कीनी सुलोग ॥ जयमाल गाय आनंद पाय । जय जय श्रीपारस जगति राय ॥ १५ ॥ घत्ता ॥ जय पार्श्व. जिनेशं नुत नाकेशं चक्रधरेशं ध्यावत हैं । मन बच आराधें भव्य समाधें ते सुरशिवफल पावत हैं ॥ इत्याशीर्वादः ॥

॥ इति श्रीमक्सी पार्श्वनाथ पूजा संपूर्णम् ॥

गिरिनारिक्षेत्र पूजा ॥
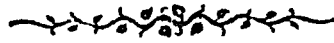
॥ दोहा ॥

वन्दों नेमि जिनेश पद नेम धर्म दातार। नेमधुरंधर परम गुरु भविजन सुख कर्तार ॥१॥ जिन वाणी को प्रणमिकर गुरु गणधर उरधार। सिद्धक्षेत्र पूजा रचों सब जीवन हितकार ॥२॥ उर्जयंत गिरिनाम तसकहो जगति विख्यात। गिरिनारी तासे कहत देखत मन हर्षात ॥ ३ ॥ अड़िल्ल ॥ गिरि सुउन्नत सुभगाकार है। पंचकूट उतंग सुधार है ॥ वन मनोहर शिला सुहावनी। लखत सुन्दर मन को भावनी॥४॥ और कूट अनेक बने तहां ॥ सिद्ध थान सुअति सुन्दर जहां ॥ देखि भविजन मन हर्षावते। सकल जन वन्दन को आवते ॥ ५ ॥ त्रिभंगी छंद ॥ तहां नेम कुमारा व्रत तप धारा कर्म विदारा शिवपाई। मुनि कोड़ि वहत्तर सात शतक थरता गिरि ऊपर सुखदाई ॥ भये शिवपुरवासी गुण के राशी विधिथित नाशी ऋद्धिधरी। तिनके गुणगाऊं पूज रचाऊं भवहर्षाऊं सिद्धिकरी ॥ दोहा ॥ ऐसो क्षेत्र महान तिहि पूजत मन बचकाय। स्थापत त्रय वारकर तिष्ट तिष्ट हतआय ॥ ओं ह्रीं श्री गिरिनारि सिद्ध क्षेत्रेभ्योः ॥ अत्र वत्र वतरः संवौषटाह्वाननं। अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र ममसन्निहितो भव भव विषट संधीसकरणं अथाष्टकं माधवी वा किरीट छन्द ॥ लेकर नीरसुक्षीर समान महा, सुखदान सुप्रासुक भाई। दे त्रय धारजजों चरणा हरना मम जन्म जरा दुःखदाई ॥ नेम पती तज राजमती भये

बालयती तहां से शिवपाई । कोड़ि बहत्तरि सातसौ सिद्ध मुनीश भये सुजसोंहरषाई ॥ ओं ह्रीं श्री गिरिनारि सिद्धि क्षेत्रेभ्यो: । जलं ॥ १ ॥ चन्दनगारि मिलाय सुगंध सुल्याय कटोरी में धरना । मोह महातप मैंटन काजसो चर्चतुहों तुम्हरे चरणा ॥ नेमिपती० ॥ सुगंधं ॥ २ अक्षत उज्ज्वल ल्यायधरों तहां पुंज करों मन की हर्षाई । देउ अक्षय पद प्रभु करुणा कर फेर न याभव वास कराई ॥ नेमपती० ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥ फूल गुलाब चमेली बेल कदंब सुचंपक तीर सुल्याई । प्राशुक पुष्प लवंग चढ़ाय सुगाय प्रभुः गुणकाम नशाई ॥ नेम पती० पुष्पं ॥४॥ नेवज नव्यकरों भरथाल सुकंचन भाजन में धर भाई । मिष्ट मनोहर क्षेपतहों यह रोग क्षुधा हरियो जिनराई ॥ नेमपती० ॥ नैवेद्यं ५ ॥ दीपवनाय धरों मणिका अथवा घृतबार्ति कपूर जलाई । नृत्य करों कर आरति ले मम मोह महातम जाव पलाई ॥ नेमपती० ॥ दीपं ६ ॥ धूप दशांग सुगंध मईकर खेवहुं अग्नि मझार सुहाई । लौकर अर्ज सुनो जिन जी मन कर्म महावन देउ जराई ॥ नेमपती० ॥ धूपं ७ ॥ लेफल सार सुगंधमई रसनाहृद नेत्रनको सुख दाई । क्षेपतहों तुम्हरे चरणो प्रभुदेहु हमें शिव की ठकुराई ॥ नेमपती० ॥ फलं ॥८ लेवसु द्रव्यसु अर्घकरोधरथाल सु मध्यमहा हर्षाई । पूजत हों तुम्हरे चरणा हरिये वसुकर्म वली दुःखदाई ॥ नेमपती० ॥ अर्घं ॥ ९॥ दोहा ॥ पूजत हों वसुद्रव्यले सिद्धक्षेत्र सुख दाय। निजहित हेतु सुहावनो पूर्ण अर्घ चढ़ाय ॥ पूर्णार्घं ॥ १० ॥ अथ पंच कल्याणार्घ ॥ पाइताछंद ॥ कार्तिक सुदिकी छठि जानो । गर्भागम तादिन मानो ॥ उत इन्द्र जजे उस थानी॥

इत पूजत हम हर्षानी । ओं ह्रीं कार्तिकसुदि छठिगर्भ मंगल प्राप्तेभ्यो: अर्घं ॥१॥ श्रावण सुदि छठि सुखकारी । तब जन्ममहोत्सव धारी ॥ सुरराजगिरि: अन्हवाई । हम पूजत इत सुख पाई ॥ ओं ह्रीं श्रावणसुदी छठि जन्ममंगल धारणे भ्यो: ॥ अर्घं २॥ सित सावन की छठि प्यारी । तादिन प्रभु दिक्षाधारी ॥ तप घोर वीर तहां करना । हम पूजत तिन के चरणा ॥ ओं ह्रीं सावन सुदी छठि दिक्षा धारणे भ्यो: ॥ अर्घं ॥ ३ ॥ एकम सुदि अश्विन मासा ॥ तब केवल ज्ञान प्रकाशा ॥ हरिसमव शरण तब कीना । हम पूजत इत सुख लीनो ॥ ओं ह्रीं अश्विन सुदी एक केवलकल्याण प्राप्ताय ॥ अर्घं ॥४॥ सित अष्टमि मास आषाढ़ा । तब योग प्रभू ने छांडा ॥ जिन लई मोक्ष ठकुराई । इत पूजत चरणा भाई ॥ओं ह्रीं आषाढ़ सुदी अष्टमी मोक्ष मङ्गल प्राप्ताय ॥ अर्घं ॥ ५ ॥ अड़िल्ल ॥ कोड़ि बहत्तरि सप्त सैंकड़ा जानिये मुनिवर मुक्ति गये तहां से सुप्रमाणिये ॥ पूजों तिन के चरण सुमनवचकाय के । वसुविधि द्रव्य मिलाय सुगाय बजायके ॥पूर्णार्घं॥जयमाल ॥दोहा॥ सिद्धक्षेत्र जग उच्च थल सब जीवन सुखदाय । कहों तास जयमाल का सुनते पाप नशाय॥१॥पद्धड़ी छंद ॥ जय सिद्ध क्षेत्र तीरथ महान । गिरिनारि सुगिरि उन्नत बखान ॥ तहां झूनागढ़ है नगरसार । सौराष्ट्र देशके मध्यसार ॥ २ ॥ जब झूनागढ़ से चले सोइ । समभूमिकोस वरतीन होइ ॥ दरवाजे से चलकोस आध । एक नदी बहत है जल अगाध ॥ ३ ॥ पर्वत उत्तर दक्षिण सुदोइ । मध्य नदी वहति उज्ज्वल सुतोय ॥ ता नदी मध्यकई कुण्डजान । दोनों तट मंदिर बने मान ॥ ४ ॥ तहां वैरागी वैष्णव र-

हांय। भिक्षा कारण तीरथ करांय ॥ इक कोस तहां यह मचो ख्याल। आगे इक वरना नदी नाल ॥५॥ तहां श्राव-कजन करते स्नान। धोद्रव्य चलत आगे सुजान॥ फिर मृगीकुंड इक नाम जान। तहां वैरागिन के बने थान ॥६॥ वैष्णव तीर्थ जहां रचो सोई। विष्णु: पूजत आनंद होय॥ आगे चल डेढ़ सु कोश जाव। फिर छोटे पर्वत को चढ़ाव ॥ ७ ॥ तहां बंधी पैरकारी सुजान। चल तीन कोश आगे प्रमाण। तहां तीनकुंड सोहैं महान। श्रीजिनके युग मंदिर वखान ॥ ८ ॥ दिगाम्बर के जिनके सुथान। श्वेतांबर के बहुते प्रमाण ॥ जहां बनो धर्मशाला सुजोय। जलकुंड तहां निर्मल सुतोय ॥ ९ ॥ फिर आगे पर्वत पर चढ़ाव। चढ़ प्रथम कूटको चले जाव ॥ तहां दर्शन कर आगे सुजाय। तहां द्वितिय टोंक का दर्श पाय ॥ १० ॥ तहां नेमनाथ के चरण जान। फिर है उतार भारी महान ॥ तहां चढ़कर पंचम टोंक जाय। अति कठिन चढाव तहां लखाय ॥११॥ श्रीनेमनाथ का मुक्तिथान। देखत नयनो अति हर्षमान॥ इक बिंब चरणयुग तहां जान। भवि करत वन्दना हर्ष ठान ॥ १२ ॥ कोई करते जय जय भक्तिलाय। कोई स्तुति पढ़ते तहां बनाय॥ तुम त्रिभुवन पति त्रैलोक्य पाल। ममदुःख दूर कीजै दयाल ॥ १३ ॥ तुमराज ऋद्धि भुगती न कीय। यह अथिररूप संसार जोय॥ तज मातपिता घर कुटुम द्वार। तज राजमतीसी सती नारि ॥१४॥ द्वादश भा-वना भाई निदान। पशुबन्दि छोड़दे अभय दान॥ शेसा-बन में दिक्षा सुधार। तप कर तहां कर्म किये सुक्षार ॥१५॥

ताही वन केवल ऋद्धि पाय । इन्द्रादिक पूजे चरण आय ॥ तहां समोशरण रचियो विशाल । मणिपंच वर्ण कर अति रसाल ॥ १६ ॥ तहां वेदी कोट सभा अनूप । दरवाजे भूमि बनी सुरूप ॥ बसु प्रतीहार्य छत्रादि सार । वर द्वादश सभा वनी अपार ॥ १७ ॥ करके विहार देशों मझार । भवि जीव करे भवसिंधु पार ॥ पुनः टोंक पंचमी को सुजाय । शिव थान लहो आनन्द पाय ॥ १८ ॥ सो पूजनीक वह थान जान । वन्दत जन तिनके पापहान ॥ तहां से सुबहत्तरकोड़ि और । मुनि सात शतक सब कहे जोर ॥१९॥ उस पर्वत से शिव थान पाय । सब भूमि पूजने योग्य थाय ॥ तहां देश देश के भव्य आय । वन्दन पर बहु आनन्द पाय ॥ २० पूजन कर कीनो पाप नाश । बहु पुण्य बन्ध कीनो प्रकाश ॥ यह ऐसा क्षेत्र महान जान । हम वन्दना कीनी हर्ष ठान ॥ २१ ॥ उनईश शतक उनतीस जान । सम्वत् अष्टमि सित फागमान ॥ सब संग सहित वंदन कराय । पूजा कीनी आनंद पाय ॥ २२ ॥ सब दुःख दूर कीजे दयाल । कहें चन्द्र कृपा कीजे कृपाल ॥ मैं अल्प बुद्धि जयमाल गाय । भवि जीव शुद्धकीजे बनाय ॥ २३ ॥ घत्ता ॥ तुम दया विशाला सब क्षितिपाला तुम गुणमाला कण्ठधरी । ते भव्य विशाला तज जग जाला नावत भाला मुक्तिवरी ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इतिश्रीगिरिक्षेत्रपूजा सम्पूर्ण ॥

सोनागिरिपूजाप्रारंभ्यते॥

* अड़िल्ल छन्द *

जम्बू द्वीप मझार भरत क्षेत्र सुकहो। आर्यखंड सुजान भद्रदेशे लहो ॥ सुवर्णगिरि अभिराम सुपर्वत है तहां। पंचकोड़ि अरु अर्द्धगये मुनि शिव जहां ॥ १ ॥ दोहा ॥ सोनागिरि के शीस पर बहुत जिनालय जान। चन्द्र प्रभू जिन आदि दे पूजों सब भगवान ॥ २ ॥ ओं० ह्रीं अत्र वत्र वतर: संवौषटह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ: ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र ममऽसन्निहितो भव भव वषट सन्निधी करणं॥ अथाष्टकं ॥ सारंग छन्द ॥ पद्मद्रह को नीर ल्याय गंगा से भर के। कनक कटोरी माहिं हेम थारन में धरके। सोनागिरि के शीस भूमि निर्वाण सुहाई। पञ्च कोड़ि अरु अर्द्धमुक्ति पहुंचे मुनिराई॥ चन्द्र प्रभु जिन आदि सकल जिनवर पद पूजो। स्वर्ग मुक्ति फल पाय जाय अविचल पद हूजों॥ दोहा ॥ सोनागिरि के शीस पर जेते सब जिनराय। तिन पद धारा तीनदे तृषा हरण के काज ॥ ओं ह्रीं श्री सोनागिरि निर्वाण क्षेत्रेभ्यो: ॥ जलं १ ॥ केसर आदि कपूर मिले मलयागिरि चन्दन। परमल अधिकीतास और सब दाह निकन्दन॥ सोनागिरि० ॥ दोहा ॥ सोना गिर के शीशपर, जेते सब जिनराज। ते सुगन्धकर पूजिये, दाह निकन्दन काज। सुगन्धं ॥ २ ॥ तंदुल धवल सुगन्ध ल्याय जल धोय पखारो। अक्षय पद के हेतुपुंजद्वादश तहांधारो। सोनागिरि० ॥ दोहा ॥ सोना गिरि के शीशपर जेते सब जिन

राज । तिन पद पूजा कीजिये अक्षय पदके काज ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥ वेला और गुलाब मालती कमल मंगाये । पारिजात के पुष्प ल्याय जिन चरण चढ़ाये। सोंनागिरि० ॥ दोहा ॥ सोंनागिरि के शीशपर जेते सब जिनराज। ते सब पूजों पुष्प ले मदन विनाशन काज ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥ विंजन जो जगमाहिं खांड घृत माहि पकाये। मीठे तुरत बनाय हेम थारी भर ल्याये ॥ सोनागिरि० ॥ दोहा ॥ सोंनागिरि के शीशपर जेते सब जिनराज। ते पूजों नैवेद्य ले क्षुधा हरण के काज ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥ मणिमय दीप प्रजालधरो पंक्ति भर थारी । जिन मन्दिर तम हार करहु दर्शन नरनारी ॥ सोनागिरि० ॥ दोहा ॥ सोनागिरि के शीशपर जेते सब जिनराज। करों दीपले आरती ज्ञान प्रकाशन काज ॥ दीपं ॥ ६ ॥ दश विधि धूप अनूप अग्नि भाजन में डालों । जाकी धूम सुगन्ध रहे भर सर्व दिशालों॥ सोनागिरि० ॥ दोहा ॥ सोनागिरि के शीशपर जेते सब जिनराज । धूप कुम्भ आगे धरों कर्म दहन के काज ॥ धूपं ॥ ७ ॥ उत्तम फल जग माहिं बहुत मीठे अरु पाके । अमित अनार अचार आदि अमृत रसछाके ॥ सोंनागिरि० ॥ दोहा ॥ सोंना गिरि के शीशपर जेते सब जिनराज । उत्तम फल तिनले मिलो कर्म विनाशन काज ॥ फलं ॥ ८ ॥ जल आदिक वसु द्रव्य अर्घ करके धरनाचो । बाजे बहुत बजाय पाठ पढ़ के सुखसांचो ॥ सोनागिरि० ॥ दोहा ॥ सोनागिरि के शीशपर जेते सब जिनराज । ते हम पूजें अर्घले मुक्ति रमण के काज ॥ अर्घं ॥ ९ ॥ अड़िल्लछंद ॥ श्री जिनवर की भक्ति सोजेनर करत हैं । फल वांछा कुछ नाहिं प्रेम उर धरतहैं ॥ ज्यों जग माहिं

किसानसु खेतो को करें। नाज काज जियजान सुशुभ आ पही झरें ॥ ऐसे पूजादान भक्ति वश कीजिये। सुख सम्पति गति मुक्तिसहज कर लीजिये ॥ पूर्णार्घं ॥१०॥ अथ जयमाल ॥ दोहा ॥ सोनागिरि के शीसपर जिन मन्दिर अभिराम। तिन गुण की जयमालिका। वर्णत आशाराम ॥ १ ॥ पद्धड़ीछंद ॥ गिरिनीचे जिन मन्दिर सुचार। ते यतिन रचे शोभा अपार ॥ तिन के अति दीर्घ चौकजान। तिन में यात्री मेलें सुआन ॥२॥ गुमठी छज्जे शोभित अनूप। ध्वज पंकति सोहैं विविध रूप ॥ वसु प्रातिहार्य तहां धरे आन। सब मंगलद्रव्यन की सुखान ॥ ३ ॥ दरवाजों पर कलशा निहार। करजोर सुजय जय ध्वनि उचार ॥ इकमंदिर में यतिराजमान। आचार्य विजय कीर्ति सुजान ॥ ४ ॥ तिन शिष्य भागीरथ विबुध नाम। जिनराज भक्तिनहीं और काम ॥ अब पर्वत को चढ़चलो जान। दरवाजो तहां इक शोभमान ॥ ५ ॥ तिस ऊपर जिन प्रतिमा निहार। तिन वंदि पूज आगे सिधार॥ तहां दुःखित भुखित को देतदान। यांचक जन तहां हैं अप्रमाण ॥ ६ ॥ आगे जिन मंदिर दुहू ओर। जिन गान होत वाजित्र शोर॥ माली बहुठाढ़े चौक पौर। लेहार कलगी तहां देत दौर ॥७॥ जिन यात्री तिन के हाथ मांहि। बखशीस रीझ तहां देत जांहि ॥ दरवाजो तहां दूजो विशाल। तहां क्षेत्रपाल दोऊ ओर लाल ॥ ८ ॥ दरवाजे भीतर चौक मांहिं। जिन भवन रचे प्राचीनआहिं॥ तिनकी महिमा वरणी न जाय। दो कुंड सुजलकर अति सुहाय ॥ ९ ॥ जिन मंदिर की वेदो विशाल। दरवाजो ताजो बहु सुढाल॥ ता दरवाजे पर द्वारपाल। लेलकुट खड़े

अरु हाथ माल ॥१०॥ जेदुर्जन को नहीं जान देंय। ते निं-दकको ना दरश देंय॥ चल चन्द्रप्रभू के चौकमांहि। दाला ने तहां चौतर्फ आयं॥११॥ तहां मध्य सभामंडप निहार। तिस को रचना नाना प्रकार॥ तहां चन्द्र प्रभूके दरशपाय फलजात लहो नरजन्म आय॥१२॥ प्रतिमा विशाल तहां हाथ सात। कायोत्सर्ग मुद्रा सुहात॥ बंदेंपूजें तहां देंय दान। जननृत्य भजनकर मधुर गान॥१३॥ ताथेंई थेंई बाजत सितार। मृदंग बीन मुहचंग सार॥ तिनको ध्वनि सुन-भवि होत प्रेम। जय कार करत नाचत सुएम॥१४॥ तेस्तुति कर फिर नायशीस। भवि चलें मनोकर कर्म खीस॥ यह सोंनागिरि रचना अपार। वरणन करको कवि लहैं पार॥१५॥ अति तनक बुद्धि आशासुपाय। बश भक्ति कही इननी सु-गाय॥ मैं मन्दबुद्धि किमलहों पार। बुधिवान चूक लीजो सुधार॥ घत्ता॥ दोहा॥ सोंनागिरि जय मालिका लघुम-ति कही वनाय। पढ़े सुने जो प्रीति से सो नर शिवपुर जाय ॥१७॥ इत्याशीर्वादः॥

॥ इति श्री सोनागिरि पूजा सम्पूर्ण॥

॥ अथ शांतिपाठ ॥

* दोहा *

ओं० प्रथम उच्चारकर करों शांतिकर पाठ। शांति होइ सब जगति में शांतिहोंय विधि आठ॥१॥ चोपाई॥ शांति करो जिन वर अरिहन्त। शान्ति करो श्री सिद्ध महन्त॥ शांति करो आचार्य गणीश। दिक्षा शिक्षा दाता ईश॥२॥

शांतिकरो उवझाय सुमुनी । बहु श्रुत विद्या दाता गुणी ॥ शांतिकरो सब साध महंत। द्वादशविधि साधत तप सन्त ॥ ३ ॥ शांतिकरो श्री सरस्वति मात। द्वादशांग जिनध्वनि विख्यात॥ शांति करो जिन भाषित धर्म। जाप्रसाद नाशें बसुकर्म ॥ ४॥ राजा प्रजा लहें आनन्द। बाढ़े धर्म सदासुख कन्द ॥ ग्रेही यती प्रवर्तें धर्म। सम्यक विधि पावें शिव शर्म ॥५॥ देश प्रदेश नगर जनसुखी। होंय अखिल दीखें ना दुःखी ॥ प्रजापाल होवे बलवान। रखे प्रजापालन वरध्यान ॥ ६ ॥ सज्जन पाले दुर्जन हने। नीति पन्थ वर्तावे जने ॥ गुणी जनों का राखे मान। निर्लोभी दाता मतिवान ॥७॥ न्याय नीति पथ चले नरेश । जन गण दुःख न व्यापे लेश ॥ ईति भीति व्यापे ना कोइ। वर्षा समय समय शुभ होइ ॥८॥ आधि व्याधि दुःख होइ न रंच। चोर भरी का नशे प्रपंच ॥ सदा सुभिक्ष होइ सुखपूर। दुःख दरिद्र नशि होवे दूर ॥९॥ राजा प्रजा परस्पर प्रीति । होय सदा वर्ते शुभ नीति॥ वैरभाव का होइ अभाव। बाढ़े धर्म कर्म का चाव ॥ १० ॥ जग मे चले सत्य व्यवहार । मिटे असत्य अशुचि आचार ॥ हिंसा मार्ग होवे बन्द। दया धर्म वर्ते सानन्द ॥११॥ मिटे अविद्या प्रगटे ज्ञान। शांति करो ऐसी भगवान ॥ मैं मतिहीन विवेक न कोइ। क्षमा करो जो अनुचित होइ ॥१२॥ अब कुछ करों प्रार्थना ईश। मो इच्छा पूरो जगदीश ॥ सत्संगति सज्जन गुणगान। धर्माजन का वर्ते मान ॥ १३ ॥ लख पर दोष मौन मनगहों। गुण वर्णन को साहसलहों ॥ धर्मी और धर्म से प्रीति। होय सदा वर्तो शुभनीति ॥१४ ॥ रोग शोक भय चिंतानशे। नशे दरिद्र धर्म मनबसे ॥ प्रिय हित बचन सदा मुख कढ़े। नाशें शत्रुमित्र

गण बढ़े ॥ १५ ॥ रहे सदा श्रुत का अभ्यास । विद्या सम्पादन की आस ॥ जब तक जग में जन्मन मरण । तव तक जिन शासन का शरण ॥१६॥ उत्तम देश और कुल धर्म । मिले सदा दाता शिव सर्म ॥ भव भव जिनवर धर्म प्रसाद । होय भक्ति तुम मिटे विषाद ॥१७॥ शांति करो नित जिनवरदेव । मन बच काय करों तुम सेव ॥ शांतिपाठ पढ़ तुम पदईश । नथूराम नवावे शीश ॥१८॥

ओंशांतिः शांतिः शांतिः !!!

॥ इति शांति पाठ सम्पूर्ण ॥

विनती प्रारंभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

चौवीसो जिन पद कमल, बंदन करों त्रिकाल । करो भबोदधि पार अब, काटो बसु विधि जाल ॥ (चालि जगति गुरु की) रोड़कछन्द ॥ ऋषभनाथ ऋषि ईश तुम ऋषि धर्म चलायो । अजित अजित अरिजीत बसु विधि शिव पद पायो ॥ २ ॥ संभव संभ्रम नाशि बहुभवि बोधित कीने । अभिनन्दन भगवान अभि रुचिकर व्रत दीने ॥३॥ सुमति सुमति बरदानदीजे तुम गुणगाऊं । पद्म प्रभु पद पद्म उर धर शीश नवाऊं ॥ ४ ॥ नाथ सुपारस पास राखो शरण गहों जी । चन्द्र प्रभु मुख चन्द्र देखत बोध लहों जी ॥ ५ ॥ पुष्पदन्त महाराज त्रिकशित दंत तुम्हारे । शीतल शीतल बैन जग दुख हरण उचारे ॥ ६ ॥ श्रेयांस भगवान श्रेय जगति को कर्ता । बासपूज पदवास दीजै त्रिभु-

नन्त भर्ता ॥ ७ ॥ विमल पद्म पाय विमल किये बहु प्रानी। श्री अनन्त जिनराज गुण अनन्त के दानी ॥ ८ ॥ धर्म नाथ तुम धर्मतारण तरण जिनेश। शांति नाथ अघताप शांति करो परमेश ॥ ९ ॥ कुंथुनाथ जिनराज कुंथु आदि जी पाले। अरह प्रभू अरि नाशि बहु भवि के अघटाले ॥ १० ॥ मल्लिनाथ छणमाहिं मोह मल्ल क्षय कीना। मुनि सुव्रत व्रतसार मुनिगण को प्रभु दीना ॥ ११ ॥ नमि प्रभु के पद पद्म नवत नशैं अघ भारी। नेमि प्रभूतजि व्याह जायवरी शिवनारी ॥ १२ ॥ पारस सुवर्ण रूप बहुभवि क्षण में कीने। वीर वीर विधि नाशि ज्ञानादिक गुण लीने १३ ॥ चार बीस जिन देव गुण अनन्त के धारी। करो विविधि पदसेव मेटो व्यथा हमारी १४ ॥ तुम सम जगमें कौन ताका शरण गहीजे। याते मांगों नाथनिजपद सेवा दीजे ॥ १५ ॥

* दोहा *

नाथूराम जिन भक्त का, दूर करो भव त्रास।
जब तक शिव अवसर नहीं, करो चरणका दास ॥

अथ विसर्जन प्रारभ्यते ॥

* दोहा *

ज्ञानज्ञान विचार नाहिं, शास्त्र उक्त नहिं सोय।
तुम प्रसाद जिनराज जी, सर्वविधि मंगल होय ॥ १ ॥
तुमहि बुलाय न जानतो, पूजा नतो न कोय।
नहीं विसर्जन बन्दना, क्षमा करो प्रभु सोय ॥ २ ॥
भावक्रिया कर हीनहो, द्रव्य हीन अघ जान।
तुमही शरिकन जानतो, क्षमा करो भगवान ॥ ३ ॥
जो प्रभु नयक बुलायते, द्रव्य लायकर पूज।
प्रभु तस रक्षा करो, जहां तहां थिति हूज ॥ ४ ॥